हरा और उस बुड्ढी को बाआराम एक गाड़ी में सवार करा दिया और दूसरी गाड़ी में कमाल खां को बैठा कर अपने घोड़े पर सवार हो आगे आगे फाटक से बाहर निकल खेमे में पहुंचा। वहां पहुंचने पर मैंने ज़ोहरा की गाड़ी पेश्तर रवाना कर दी और एक शख्स को कह दिया कि अगर रास्ते में अपना कोई "तिलहा" याने जासूस दिखलाई पडे तो फौरन् आकर हमें खबर देना। तब मैंने अपने वालिद से मुलाकात की और पूछा कि आप ने नौकरों और सहीसों के लिये भटोट और "शमशिया" याने (हाथ पकड़नेवाले) मुकर्रर किये या नहीं"?।

उनने कहा "मैंने सब मुकर्रर कर रक्खे हैं और हर एक शख्स का काम उस को बखूबी समझा दिया है; सब सामान दुरुस्त रहने पर किसी बात की मुश्किल न पड़ेगी। मगर क्या तुझे पूरा यकीन है कि कमाल खां के पास कोई हथियार तो नहीं है?"

मैने कहा "उसके पास फ़कत एक तलवार है मगर उस्से क्या होता है? मैं और बद्रीनाथ दोनों उस का बन्दोबस्त कर लेंगे वह हर्गिज़ हम लोगों का राज़ पाकर होशियार न होने पावेगा"।

वालिद ने कहा "तो तुम लोग खूब पीछे रहो ताकि अगर किसी तरह का झगड़ा हो तो वह आवाज न सुन सके और जिस वक्त मुझे कोई तिलहा दिखलाई पड़ेगा फ़ौरन् तुम्हारे पास खबर भेज दूंगा। उस वक्त जैसी मर्जी हो करना, चाहे उसे हमारे पास तक लाना चाहे वहीं काम तमाम करदेना"।

मैंने कहा "बहुत अच्छा" "जैसा मौका होगा देखा जायगा"।

जिस वक्त कमालखां के नौकर चाकर और मेरे आदमी मेरे पास से हो कर गुज़रने लगे मैं अपने वालिद के बन्दोबस्त को देख कर अन्दर ही अन्दर निहायत खुश होता था। हर एक के साथ एक २ निहायत होशियार भटोट और दो दूसरे शख्स ज़रूरत पड़ने पर मदद पहुंचाने के लिये लगे थे, मगर वे इस तौर से चले जाते थे कि शको शुबहे का नामो निशान न था।

हर एक शख्स मेरे नजदीक से गुजरने पर मतलब आमेज निगाह से मेरी तरफ़ देखता गोया इशारतन् यह कहता था "कि उसके दिल के लायक

शिकार है" । तमाम गरोह और उनके हथियारों को चांदनी में चमकता देख मेरी तबीअत दूनो हुई जाती थी ।

मैंने ख्याल किया कि जिस खुशी की ज़िक्र मेरे वालिद करते थे वह यही है । सच है दुनिया के दूसरे अदना रोजगारों में यह बात कहां पाई जा सक्ती है ! ये सब लोग मेरे हैं, अब अमीरअली के नाम का रोब और खौफ़ गालिब होगा; मर्दों को इसपर तअज्जुब होगा और औरतें जिस वक्त मेरा हाल सुनेंगी और मेरी बहादुरी का ख्याल आंखें बन्द कर करेंगी तो उन का कलेजा धड़कने लगेगा । साहब मैं अपनी तईं हर्गिज़ रोक न सका और एकबएक बोल उठा कि " अल्लाह चाहेगा तो वह वक्त बहुत जल्द आवेगा अभी तो फ़कत आगाज़ है, मैं अपने ख्यालातों के पूरा करने का जल्द बन्दोबस्त करूंगा " ।

इतने में बद्रीनाथ ने मुझे पुकार कर कहा "नारायण के वास्ते ! यह क्या कर रहे हैं ? जल्द आइये हम लोग आपही के इन्तजार खड़े हैं " ।

मैंने घोड़े को तेज़ किया और फौरन् उस के पास पहुंचा । कमालखां ने अपना सिर परदे के बाहर निकाला और पूछा कि तमाम आदमी जमा हो गये ?

मैंने कहा "हां, वे आगे गये हैं फ़कत मैं, मेरे भाई और चन्द लोग आप की मुहाफ़जत में चलेंगे" ।

उसने कहा " दुरुस्त है अगर मैं इस हचहच के मारे सोने पाऊं तो जरा लेट रहता हूं । आह ! अगर मैं इस कफ़स में बन्द न होकर अपने घोड़े पर सवार होता तो मेरी तबीअत कैसी खुश होती " ।

बद्रीनाथ ने कहा "सब्र कीजिये, मैं उम्मेद करता हूं कि आप बहुत जल्द इस के बाहर आवेंगे" ।

उसने कहा " दोस्त जब मेरे बाहर निकलने का खौफ़ जाता रहेगा मैं अज़खुद निकल आऊंगा " । इतना कह कर उसने फिर परदा गिरा दिया ।

कुछ देर तक हम और बद्रीनाथ दोनों खामोश चले गये, चलते २ एक चढ़ाई पर पहुंचे, मालूम होता था कि यह रास्ता किसी दरिया को जाता है

क्योंकि मुझे ऐसा ख्याल हुआ कि दूर चांदनी में मैंने पानी चमकते हुये देखा। जंगल पेश्तर से ज्यादा घना था और मैंने बद्रीनाथ से कहा—"मैं समझता हूं कि यही मुकाम होगा, यहां गाड़ी की इन्तजारी करना चाहिये क्योंकि हम लोग बहुत दूर निकल आये हैं"।

उसने कहा "बेहतर है, गाड़ी आती ही होगी"।

इधर तो गाड़ी के पहिये की गड़गड़ाहट सुनाई दी और उधर वह शख्स भी पहुंचा जिसे हम लोगों ने भेद लेने के लिये भेजा था।

उसे देखतेही मैंने पूछा "क्या खबर है? सब काम दुरुस्त है?"

उस ने कहा "मुझे ज्योंहीं पहिला बिलहा दिखलाई दिया मैं फौरन् आप के पास खबर देने आया हूं, उन्होंने एक निहायत उमदा मुकाम तजवीज किया है और मैं उम्मेद करताहूं कि वे लोग अपना काम खतम कर के फकत आपही की राह देखते होंगे।

मैंने कहा "बेहतर है, तो तू लौट जा तेरा यहां कुछ काम नहीं है। मगर वह बमिन्नत अर्ज करने लगा कि मुझे रहने दीजिये सो मैंने उसे रहने दिया।

जब कमाल खां की गाड़ी पहुंची, बद्रीनाथ ने हांकनेवाले को इशारा किया, उसने भी समझ लिया और सिर हिलाया कि मैं समझता हूं, मैं अपने साईसों को होशियार और खबरदार करके गाड़ी के पीछे ही पीछे ढार पर चला। आधी दूर पहुंच कर देखा तो सड़क फिर ऊपर को चलतीहै। मैंने गौर किया कि यह मुकाम ठीक है गाड़ीवाले को भी यही ख्याल हुआ और उसने गाड़ी को रास्ते से हटा कर हांकना शुरू किया। एक पहिया तो ऊंचे पर था और दूसरा गड़हे में जा पड़ा कि एकदम गाड़ी उलट गई और कमाल खां को लिये बड़े ज़ोर से नीचे गिरी।

हम सब फौरन् अपने घोड़े से उतर कर दौड़ पड़े और देखा कि कमाल खां गाड़ी के नीचे दबा हुआ कँहर रहा है।

हम लोगों ने उसे उठा कर निकाला मगर या तो उसे सख्त चोट लगी या वह इस कदर दहल गया कि बोल न सका। आखिरकार उसे होश हुई और उसने गाड़ीवाले को सख्त गालियां देना शुरू किया और मुझ से बोला—

देखते हैं जमादार साहब ! कैसी साफ़ और चिकनी सड़क है कि एक कंकड़ तक रास्ते में नहीं तिसपर भी यह नालायक रास्ता छोड़ इतने ऊंचे पर ले आया और अनकरीब मेरी जान ले चुका था"।

मैंने कहा "इसकी सज़ा इस गफ़लत के लिये बेशक की जायगी, मगर खां साहब आप को चोट तो नहीं लगी"।

उसने अपना दहिना बाज़ू उठा कर दिखलाया और कहा "मेरे इस बांह में सख़ दर्द है, अल्लाह करता कि मैं भी इस कफ़स से निकल कर घोड़े पर सवार होता"।

बद्रीनाथ ने कहा "लाचारी है, वरना यह कोई बात न थी, खैर हुई कि आप की कोई हड्डी नहीं टूटी। आइन्दे से हमलोग आप के नज़दीक रहेंगे और इस नालायक बदमाश की सख़ ताकीद रक्खेंगे"।

इस अर्से में गाड़ी फिर दुरुस्त करके सड़क पर लाई गई और कमाल खां की चटाई और तकिया उस पर लगा दिये गये। ज्योंही वह हम लोगों की तरफ़ पीठ कर एक हाथ से पड़दे की खूंटी पकड़ पहिये पर पैर रख गाड़ी के अन्दर जाने लगा त्योंही मैंने फौरन् रूमाल उसके गले में दिया।

"यह क्या ? यह—" बस इतने ही लफ़ज़ उसकी जबान से साफ़ निकले, फिर तो वह गले में सरसराने लगा पस फौरन् खूंटी छोड़ ज़मीन पर आते आते बीचही में उसका दम निकल गया।

बद्रीनाथ ने कहा "शाबास ! खूब सफ़ाई से काम किया ! इससे बढ़ कर तो शायद मैं भी न कर सकता। आप देखते हो हैं कि उसने दम तक भी न लिया अब तो मीर साहब आप को एतक़ाद हो गया होगा कि ज़मीन तक आतेही आते इनसान का काम खतम हो सकता है।

मैंने कहा "एक मर्तबे मैं इसे आप के हाथ से देखा चाहता हूं क्योंकि यह कमाल खां चन्द लहमों तक गाड़ी को पकड़े था—मगर खैर फिर देखा जायगा—तब मैंने अपने लोगों से कहा "उठाओ लाश को और गाड़ी में डाल दो, वक़ फ़ज़ूल करने का मौका नहीं है"। पस उन लोगों ने लाश को गाड़ी में धर दिया और फौरन् बैलों को हांक कर हमलोग रवाना हुये।

रास्ते में मैंने बद्रीनाथ से कहा "अगर यह इस हिलने से शायद जी उठे तो क्या हो?"।

उसने कहा "कुछ खौफ़ नहीं, अगर वह जी उठेगा तो उसे फिर मार डालेंगे मगर यकीन रखिये वह मर गया है; आप के झटके से आज तक किसी ने फिर दुबारा दम नहीं लिया। मैं देखता हूं कि आप के पुराने उस्ताद ने आप को खूब वर्ज़िश सिखलाई है"।

मैंने कहा "मुझे रोज़ बरोज़ ज्यादा रम होता जाता है और अगर इसी वक्त मुझे दो तीन शख्स और दिये जांय तो मैं यकीन करता हूं कि मैं बाआसानी उनका भी काम तमाम कर सकूंगा"।

बद्रीनाथ ने हँस कर कहा "ठीक है मगर जो कुछ आप ने इस वक्त किया है उतनेही से आसूदा रहिये। यह देखिये हमलोग बिल पर पहुंच गये, साम्हने गरोह के तमाम लोग जमा हैं।

ज्योंही हमलोग पहुंचे वालिद ने पूछा कि "उसे ले आये?"।

मैंने कहा जी हां "उसकी मिट्टी को गाड़ी में ले आया हूं"।

तब उन्होंने बद्रीनाथ से मेरी तरफ़ इशारा करके पूछा "क्या इसी का यह काम है?"

उसने कहा "जी हां, यह इन्हीं की काररवाई है, मेरे दखल देने की हर्गिज़ ज़रूरत न पड़ी"।

वालिद ने कहा "अलहम्दुलिल्लाह यह लड़का फर्ज़न्द है!" फिर लोगों से कहा कि "अब यहां ठहरने का मौका नहीं है तुम लोग दर्या का रास्ता लो हम सब पीछे से आ जांयगे"।

मैंने देखा कि अब मेरी कोई ज़रूरत नहीं है सो मैं भी गोदावरी को रवाना हुआ, देखता क्या हूं कि सब पार उतर चुके हैं, बस मैं भी फौरन् पार हुआ और ज़ोहरा की गाड़ी के मुकाबिल पहुंचने के लिये घोडे को तेज़ किया मैं न जानता था कि वह मेरी गैरहाज़िरी के बारे में क्या ख्याल करती होगी और मैं उसे क्या जवाब दूंगा; फिर मैंने ख्याल किया कि अच्छा कोई बहाना बना लूंगा। ज्यों ज्यों मैं आगे बढ़ता था मुझे गरोह के लोग मिलते

जाते थे जो दस दस या बारह बारह साथ चले जाते थे ; गोकि मैंने हांकने वालों को ताकीद कर दी थी कि गाड़ी को तेज़ मत चलाना तो भी मुझे इतनी दूर आने पर भी गाड़ी दिखलाई न दी। मुझे ज्यादा अन्देशा हुआ और मैंने घोड़े को सरपट दौड़ाया।

बेहतर हुआ कि मैंने ऐसा किया क्योंकि ज्योंही मैं कुछ दूर आगे बढ़ा मैंने शोर और चिल्लाहट की आवाज़ सुनी। मुझे उसी दम ख्याल हुआ कि कहीं उस पर डाँका तो नहीं पड़ा? अग़लब है कि ऐसा हो क्योंकि रास्ता तंग और दोनों तरफ़ जंगल घना था और गाड़ी के साथ थोड़े लोगों को देख कर शायद चोरों ने डाँका डाला हो। मैंने फौरन् अपनी तलवार खींच ली क्योंकि ज्यों ज्यों मैं आगे बढ़ता था शोर और चिल्लाहट की आवाज़ तेज़ होती जाती थी। चांद अब तक रोशन था और मैं बखूबी तमाम देख सकता था—

देखता क्या हूं कि मेरे पांच या छ शख्स गाड़ी की हिफ़ाज़त में उसके इर्द गिर्द तलवार खींचे डांकुओं से लड़ रहे हैं दो डांकू जमीन पर गिरे पड़े हैं और बाकी के मेरे आदमियों पर तलवार चला रहे हैं, एक तो उनमें से ज़ख्मी हो कर गिर पड़ा और बाकी के सब थक गये हैं। तरफ़ैन के लोग इस लड़ाई में ऐसे मशगूल थे कि किसी ने भी मुझे पहुंचते न देखा। मैंने पहुंचते ही बिसमिल्लाह कह कर एक हाथ ऐसा मारा कि एक डाकू ज़मीन पर गिर पड़ा और वे सब घबड़ा गये। मेरे नमकख्वार लोगों ने मुझे देखते ही जोश पकड़ा और ललकार कर दुबारा दुश्मनों पर टूटे।

कुछ देर तक और लड़ाई हुई, मैंने फौरन् घोड़े से कूद कर अपनी बंदूक निकाली और उस डांकू पर एक बार दागी जो तलवार उठाये मेरी तरफ झपटा चला आता था। गोली उस के बदन के पार हो गई और वह गिर पड़ा। इस पर बाक़ी के तमाम डांकू भाग गये। हम लोगों ने कुछ दूर तक उन का पीछा किया और उन में से एक नौजवान लड़के को पकड़ लाये, बाक़ी के सब भाग गये।

बारहवां अध्याय।

जब मैं गाड़ी के पास पहुंचा मैंने सब से ओव्वल बिचारी ज़ोहरा को प्यार व दिलासा दिया जो अपनी बुड्ढी मजदूरनी के साथ मारे खौफ़ के इस क़दर चिल्ला रही थी कि इन सभों का शोर गोया आसमान फाड़े डालता था जिस का बयान करना दुश्वार है। मैंने देखा कि वह निहायत खौफ़ खा गई थी मगर वे बदमाश उस के पास तक न पहुंचने पाये थे, और जब मैंने उसे दिलासा दे कर यह एकरार किया कि अब मैं हर्गिज़ तेरा साथ न छोड़ूंगा तो वह किसी तरह खामोश हुई और मुझे उन चोरों का किस्सा यों सुनाने लगी कि हम लोग चले जाते थे कि चोरों ने सड़क के किनारे झाड़ी में से पहिले पत्थर फेंकना शुरू किया और जब उन्हों ने ख्याल किया कि इन के पास हथियार नहीं है तो झाड़ी से यकबयक निकल आये और लड़ाई होने लगी।

वह ज़ख़्मी चोर चल न सकता था इसलिये वह लाश के साथ गाड़ी में डाल दिया गया; और उस लड़के के दोनों बाज़ू पीठ पर बाँध उस के गले में रस्सी डाल कर मैंने अपने ज़ीन से कस लिया। अनक़रीब बीस शख्सों को ज़ख़्मियों की हिफ़ाज़त में छोड़ हम लोग फौरन् रवाना हुये।

आफ़ताब निकलने के पेश्तर एक बड़े गांव में दाख़िल हुये, गांव वाले उठ चुके थे और मवेशी फाटक से निकल चरागाह को जा रहे थे। मैंने अपने लोगों को हुक्म दिया कि एक इमली के दरख़्त तले खेमा लगाओ और मैं अपने वालिद और बद्रीनाथ के साथ फाटक पर गया और दर्याफ़्त किया कि इस गांव का पटेल या जो कोई हाकिम वा ख़ास अफ़सर हो कहां रहता है।

बाद कुछ देर ठहरने के हाकिम ने हमें बुलाया और हम लोग उस के मकान में दाख़िल हुये, देखा कि एक बरामदे में जहां वह अपना काम करता था बैठा है। वह ज़ात का कायथ था और जैसे कि ये लोग अकसर होते हैं वह शख्स निहायत खलीक़ और नेक मिज़ाज था। इस मौके पर मेरे वालिद मेरी तरफ़ से बोलने वाले थे। ओव्वल तो उन्हों ने अपने तईं सौदागर और मुझे सिपाहियों का अफ़सर बतलाया—वही जमरखेर के पुराने किस्से

के माफिक—और फिर उस डांके का बयान किया जो हम लोगों पर पड़ा था। इस पर उसे जल्दी एतकाद न होता था।

उसने कहा "यह मुमकिन नहीं, जब से चंद मशहूर चोरों का सिर गिरफ़ार कर के काटा गया तब से मुद्दत हुई कि बरसों से इस तौर के डांके या लूट मार का ज़िक्र तक इस तरफ़ सुनने में न आया आप को कुछ सहो हो गया होगा।

मैंने वालिद से कहा कि आपने अपने घायल लोगों का ज़िक्र अभी नहीं किया और यह भी कि चंद चोर हमारे हाथ से मारे पड़े। इन हज़रत को तब एतकाद होगा कि जब ये उन्हें या उन बदमाशों की लाश देख लेंगे और फिर इस का भी ज़िक्र करना आप भूल गये कि हम लोग उनमें से दो शख्सों को गिरफ़ार भी तो कर लाये हैं।

हाकिम ने कहा "दरहकीकत अगर ऐसा है तो बेशक यह बातही दूसरी है, सच तो यों है कि हर रोज़ न जानें कितने मुसाफिर एक गांव से दूसरे गांव तक पहुंचने के लिये मुझ से सिपाहियों को दरखास्त किया करते हैं और बयान करते हैं कि यहां से निर्मूल के रास्ते में अकसर खौफ़ रहता है कि मैं उन की बातें सुनते २ उखता गया और मुझे एतकाद नहीं होता कि दरहकीकत कोई खतरा रास्ते में है या ये लोग यौंही रोज़ बरोज़ शिकायत किया करते हैं।

वालिद ने जवाब दिया "आप की इनायत से हमारे साथ मुहाफज़त की कुछ कमी नहीं है हम लोग खुद इतने हैं कि अपनी हिफाज़त आप ही कर लेते हैं आप सुन ही चुके हैं कि हमने डांकुओं को मार भगाया; हम लोग फकत इतनाही चाहते हैं कि हमारे ज़ख्मी लोग यहां मंगवा लिये जांय और जिन बदमाशों को हमने गिरफ़ार किया है उन का इनसाफ़ किया जाय"।

मोहनलाल ने कहा "यह हम लोगों के लिये निहायत उम्दा होता अगर तमाम मुसाफिर आप लोगों की मानिन्द अपनी हिफ़ाजत कर सकते, मुल्क में चोरों की कमी हो जाती क्योंकि फिर उनके रोज़गार में कोई मुनाफा न रहता। मुझे याद है कि अभी आपने यह फ़र्माया था कि उन में से एक

शख्स को आपने जीता ही पकड़ा है, वह कहां है? शायद उस से कुछ पता लग सके"।

मैंने उस लड़के को मँगवाया और उस से कुछ देर तक उस के गरोह के साथियों के बारे में चंद सवालात पूछे गये मगर वह कुछ भी जवाब न देता था। आखिरकार सवाल पूछने वाला मायूस हो कर चुप हो रहा बद्रीनाथ ने कहा "यों तो यह एक लफ्ज़ भी न कहेगा इसे कोड़े लगाइये, मैं कह सकता हूं कि तब यह ज़रूर बयान करेगा"।

मोहनलाल ने कहा "ठीक है मैं भी कोड़ा मँगवाने ही को था" पस उस ने अपने एक आदमी को कोड़ा लाने के लिये भेजा और वह फौरन् ले आया।

कोड़े को देखते ही वह चोर कांप उठा और उस्से फिर पूछा गया कि अब भी तू कुछ बोल और बतला मगर वह खामोश था।

मोहनलाल ने कहा "इसे पटक कर खाल खींच लो। फौरन् उसे लोगों ने मुंह के बल ज़मीन पर पटक दिया और एक मज़बूत शख्स कोड़े लगाने लगा, हर ज़रब पर खून निकलता था मगर उस ने एक लफ्ज़ भी मुंह से न कहा और न रहम के लिये चिल्लाया।

तब एक शख्स जो उसे पकड़े हुआ खड़ा था बोला "इस्से भी कुछ मतलब न निकलेगा फौरन् एक थैली राख मँगाइये, जहां इसके मुंह पर लगाया गया कि इसने कुबूला"।

इतने में एक तोबड़ा गरम राख का भर के लाया गया और उस के मुंह पर बाँध दिया गया, एक शख्स उस के पीछे खड़ा हो कर उस की पीठ पर ज़ोर से मुक्के मारने लगा ताकि उस का दम ज़ोर से चलने लगे। इस्से कुछ कामयाबी हासिल हुई क्योंकि थोड़ी देर बाद जब उसे सख्त अज़ीयत पहुंची वह कुछ बरबराने लगा और तोबड़ा उस के मुंह से हटाया गया।

जब उसे कुछ बोलने की ताकत हुई उसने कहा कि "आप मुझ से इकरार कराया चाहते हैं मगर यह तमाम फ़ज़ूल है, मैं खूब जानता हूं कि मेरे साथी इस वक्त कहां है पर मैं उनके शिकस्त देने वालों को बद दुआ देता हूं"। इतना कह कर उसने मुझे बहुत गालियां दीं और मेरी तरफ इशारा कर के

कहने लगा "तैने ही मेरे वालिद को मारा और चूंकि वे मर गये मैं भी हर्गिज़ जीना नहीं चाहता, जब तुम्हारी खुशी हो मुझे फांसी लटका दो"।

मोहनलाल ने कहा "हां मैं तो इस के वालिद को भूलही गया, लाओ उसे भी लाओ"।

गोकि मैंने उसे सख्त जखमी किया था मगर मुझे यक़ीन था कि वह अब तक मरा न होगा। जब लोग उसे एक चारपाई पर डाल कर लाये उसका दम उसके लबों पर था, वह बमुश्किल सांस ले सकता था और उसके गले में एक क़िस्म की खर्खराहट हो रही थी। इसलिये हमलोगों ने उसे तकलीफ़ देना लाहासिल समझा मगर उस के बेटे से इक़रार कराने की कोशिश फिर करने लगे। तोबड़ा चढ़ा कर दुबारा कोड़े लगाये गये मगर सिवाय गाली देने के उसने एक लफ्ज़ भी न कुबूल किया।

मोहनलाल ने कहा "बस अब यह किसी तरह नहीं कुबूल करेगा इसे फाँसी लटका दो। मैं इन शरीर बदमाशों को खूब जानता हूं, अगर इसे बरस भर तक इसी तरह अज़ीयत दीजियेगा तो भी यह एक लफ्ज़ न कुबूल करेगा इसलिये देर करना बिलकुल लाहासिल है।

वालिद ने कहा "जैसी आप की मर्ज़ी, शायद यह उस वक्त कुबूल करे जब इसके गले में रस्सी दी जायगी"

मोहनलाल ने कहा "देखें, मगर मुझे उम्मेद नहीं है। अच्छा फाँसीवालों को बुलाओ"।

साहब, ये कमबख्त हर जगह रहते हैं फ़ौरन् हाज़िर हुए और वह चोर उनके सुपुर्द हुआ।

चलते वक्त मोहनलाल ने कहा "देख अब तेरे बचने की कोई उम्मेद नहीं है अगर अब भी तू इक़रार करे तो मैं तेरी जान बख्श कर तुझे नोकरी दे सकता हूं और तेरी मदद रक्खूंगा कि तुझे किसी तरह का नुकसान न हो।

उसने कुछ हिचकिचा कर अपने वालिद की तरफ़ देखा जिसका दम निकल रहा था और अकड़ कर हमलोगों की तरफ देख कहने लगा—

"अगर आप तमाम दुनियां की दौलत मेरे आगे रख देवें तो भी मैं एक

लफ़्ज़ न बतलाऊंगा। अगर मेरे वालिद जिन्दा रह कर आप लोगों के इख़्तियार में रहते तो मैं बेशक तुम्हारी नौकरी मंजूर कर लेता, मगर अब आप मुझे हर्गिज़ नहीं बचा सकते, बेहतर है कि मैं अपने साथियों के हाथ से न मर कर आपही के हाथ से मारा जाऊं क्योंकि मैं उनसे भाग कर कहीं नहीं बच सकता"।

मोहनलाल ने फाँसीवालों से कहा—"ले जाओ इसे और देखो तुम लोग अपना काम बखूबी अंजाम दो"।

उन्हों ने कहा "और हमारा मामूल महाराज! उसे मत भूलियेगा"।

उसने कहा "नहीं नहीं, जाओ यहां से, तुम्हारा मुंह देखने से पाप होता है। अपना काम खतम करने के बाद कोतवाल के पास जाना उसे हुक्म भेज दिया जायगा कि वह तुम्हें एक भेड़ और तुम्हारे पीने लायक शराब दे दे"।

सभों ने झुक कर सलाम किया और उस कमबख़्त को लेकर रवाना हुए।

मैंने पूछा "इसे कहां फांसी दी जायगी मैं चाहता हूं कि मैं फिर एक मर्तबा कोशिश करूं कि यह इकरार करके अपनी जांबख़्शी पा भला आदमी होकर रहे"।

मोहनलाल ने कहा "कहीं फाटक के बाहर फांसी दी जायगी मैं खुद उस मुकाम को नहीं जानता मगर मेरे आदमी आप को बतला देंगे। मुझे उम्मेद नहीं है कि वह आप के समझाने से माने और फिर आप को तकलीफ़ करने की क्या ज़रूरत है?।

मैंने कहा "जी नहीं तकलीफ किसी बात की नहीं है मुझे इसके इस कड़ेपन पर ताज्जुब मालूम होता है और मैं इसका आखिरी दम देखा चाहता हूं"

बद्रीनाथ ने कहा "मै भी आप के साथ चलूंगा"। सो हमलोग मोहनलाल से रुख़सत होकर जिधर जल्लाद गये थे उसी तरफ़ रवाना हुए।

फाटक से तीर भर के फ़ासले पर दो सूखे साखे नीम के दरख़्त थे जिन पत्तियों का नाम भी न था। इनके नीचे जल्लाद वगैरह और इर्द गिर्द गांव के लड़के और बहुत से तमाशा देखने वाले जमा थे। हम लोग तेज़ कदमों से वहां पहुंचे और देखा कि तमाम तयारी हो गई है। दरख़्त की एक शाख़ में

फांसी लटक रही थी और; एक जल्लाद एक तरफ़ दरख़ तले बैठा किसी पत्थर पर छुरा तेज़ कर रहा, था इस छुरे को तेज़ करने से उसका क्या इरादा था मैं कुछ न समझा पर चूंकि मेरा खास मतलब उस चोर से था इस लिये मैंने उन से कुछ न पूछा। उसने दूर से हमें आते देखा और जल्लादों से कहता था कि इन लोगों के आने के पेश्तर मुझे जल्द फांसी चढ़ाओ मगर उन्होंने यह ख्याल कर के कि शायद हम लोग कोई दूसरा हुक्म लाते हों हमारे आने तक उसे फांसी न लटकाया। मैंने उस चोर से कहा "क्या तू ज़िन्दगी से हाथही धोवेगा? तुझे अपनी यह नौजवानी प्यारी नहीं है फिर भी मैं तुझसे इकरार करता हूं अगर तू अब भी अपने साथियों का नाम व पता बतलावें तो मैं तेरी रिहाई करा दूं"।

उसने कहा "ज़रा इस रस्सी को जो मेरे बाजू में बँधी है ढीली कराइये तो मैं आप से कुछ कहूं क्योंकि इस हालत में मुझे सख़ दर्द होरही है; मैं आप से क्या बात करूं"।

मैंने जल्लादों से कहा "अच्छा ज़रा रस्सी ढीली करदो और एक शख़स इसे पकड़े रहो ताकि यह भाग न सके"।

मेरे इस कहने पर वह कुछ मुसकराया और रस्सी ढीली किये जाने पर यों कहने लगा कि—

"गोकि मेरी इस हालत के बाइस आपही हैं पर चूंकि आपको मुझ पर शायद कुछ रहम आया है मैं अपने खून से आप को बरी करता हूं क्योंकि मैं खूब जानता हूं कि थोड़े ही देर बाद मेरी मौत होगी। मगर फिर भी मैं आप से कहता हूं कि मेरी ख़ाहिश जीने की हर्गिज़ नहीं है और आप यह उम्मेद मुझसे हर्गिज़ न करें कि मैं अपने साथियों को धोखा देकर अपनी जांबख़्शी कराऊंगा। अगर मेरे वालिद जीते रह कर मोहन लाल के इख़्तियार में होते तो शायद मैं किसी बात का वादा करता मगर वे इस दुनिया से कूच कर गये, मेरे चाचा भी आपकी गाड़ी पर हमला करते वक्त आप के आदमीयों के हाथ से मारे पड़े और अब मेरा इस दुनिया में कौन है जिसके लिये मैं जीने की पर्वाह करूं। एक दिन मैं मेरे तमाम मकान का

खातमा होगया, और यह हमारी किस्मत थी। मगर आप जाकर हमारी बद्दुआ मोहनलाल को दीजियेगा। उसी ने मुझे मारा और खुदा इसका बदला उस्से लेगा। और अब मुझे बेशक फांसी चढ़ा दीजिये मुझे जो कुछ कहना था मैं कह चुका"।

मैं कुछ कहने को था मगर बद्रीनाथ ने मुझे रोका और कहा-"क्या फायदा, यह बड़ा ज़िद्दी है और मेरे कहने पर एतकाद रखिये कि अगर इस की जान भी बख्श दीजावे तो यह दूसरे भले आदमीयों को भी बदराह पर चलावेगा, इसलिये इसे फांसी देने दो, यह इसी काबिल है"।

जल्लाद सब मेरी तरफ हुक्म के लिये देखने लगे और मैंने कहा हां अपना काम करो, देर करना बिलकुल बेफायदा है। उस लड़के की मुश्कें फिर दुबारा कसकर बांधदी गईं और उसे जमीन पर पटक कर उस जल्लाद ने जो छुरा तेज़ कर रहा था उसके दोनों पैर की नसें एड़ी के पास से काट दी और फौरन् उसके गले में फंदा डाल फांसी लटका दिया और वह दरख्त की शाख तले अधड़ में लटक कर तड़फड़ाने लगा।

बद्रीनाथ ने आंखे फेर कहा "आह इसे देखकर मेरी तबीयत कैसी घबड़ाती है। इस्से और हमारे काम से कितना फरक है उसमें तो जो शख्स मरने वाला होता है उसे रुमाल गले में पड़ते देर नहीं होती कि वह फौरन् कूच कर जाता है"।

मैने कहा "आप सही कहते हैं हम लोगों का काम बेशक कहीं बढ़ कर है, मगर ये फांसीवाले बड़े कमबख्त हैं इनसे आप और क्या उमेद कर सकते हैं? चलिये अब खेमे को चलें वालिद वहां होंगे चलिये देखें कि कमालखां के पास से क्या २ माल दस्तयाब हुआ है"।

जब हम लोग खेमे में पहुंचे देखा कि उसकी सब गठड़ियां खोली जा रही हैं। पहिले तो दो संदूक निकले और उनमें क्या है हम लोग देखने के लिये निहायत बेसब्र हुये। एक में तो उसके सरकारी कागजात थे जिन्हें मेरे देखने के बाद लोगों ने फौरन् जला दिया। इन कागज़ातों के नीचे एक थैली

निकली जिसमें सोना भरा था और जिसे बद्रीनाथ ने फौरन् उठा कर सबको दिखलाया और कहा—

"इसमें कुछ जमा है जो इन रद्दी कागज़ों से कहीं बढ़ कर होगा, खैर तो अब दूसरा बकस खोला जाय"।

यह संदूक भी तोड़ा गया और दरहकीकत इसमें बड़ा माल निकला। जब ऊपर के कपड़े हटाये गये तो बहुत से चांदी के सिल कतार से रक्खे हुये दिखलाई पड़े।

इन्हें बाहर निकालने पर कुछ कपड़े फिर दिखलाई दिये और उनके नीचे दस सिल सोने के ठीक उसी तरह के भारी भारी निकले उनमें से एक सिल उठा कर बद्रीनाथ ने कहा "यह लब्बो लुआब निकला अल्लाह जाने इसमें कितना होगा मगर यह बात अब साफ़ ज़ाहिर है कि वह शख्स काबिल मारने के था उसने बेशक काश्तकारों को खूबही लूटा होगा"।

सोने चांदी के सिल सब मेरे वालिद के सुपुर्द कर दिये गये कि वे भी पेश्तर के लूट की चीजों में शामिल कर दिये जावें; अब फ़क़त उसकी हिम-यानी और पहिनने के कपड़े देखने बाकी रह गये। इसमें हम लोगों को कुछ बहुत उम्मेद न थी।

बद्रीनाथ ने कहा "ठहरिये इधर देखिये हिमयाने में एक थैली और भी कुछ है"।

मैंने उसके हाथ से लेकर उसे खोलना शुरू किया और कई परत सुफ़ेद कागज़ के निकले जिन्हें देख कर मैंने कहा "इन में कुछ नहीं है मैं ख्याल करता हूं कि ये कागज़ उसने लिखने के लिये अपने पास रक्खे थे"।

वालिद ने कहा "अच्छा आखीर तक खोलते चलो देखें क्या निकलता है?"

बाद तीन परत और खोलने के एक दूसरा पुलिन्दा निकला जो धागे से बँधा था। मैंने कहा "आखिरकार कुछ तो दिखलाई पड़ता है अल्लाह अकबर ये दर्शनी हुण्डियां हैं और बेशक इन की कीमत भी ज्यादा होगी, क्या कोई पढ़नेवाला है?"

बद्रीनाथ ने कहा "मैं पढ़ तो नहीं सकता पर जो कोई अक्षर होगा और

फारसी में न लिखा होगा तो शायद मैं उसे पढ़ सकूं"।

मैंने कहा "नहीं नहीं यह नागरी या गुजराती में लिखा है पस अपनी अक़्ल को सर्फ़ कीजिये"।

बद्रीनाथ ने एक को हाथ में ले कर बग़ौर देखा और कहा "यह २०००) की है यह अङ्क देख लीजिये"।

मैंने बाकी के कागज़ात भी उसे दिये और कहा "आप का कहना सही जान पड़ता है इन्हें देखिये ये कितने २ के हैं?"।

"यह दूसरी ४००) की है"।

वालिद ने कहा "कुछ बहुत भारी नहीं है खैर आगे चलो"।

बद्रीनाथ ने कहा "और यह तीसरी ज़रा मुझे फिर देख लेने दीजिये—हां ठीक है यह बाईस सौ की है और यह आखिरी २४०) की है"।

मैंने कहा "तो मुझे दिखलाइये सब मिला कर चार हज़ार आठ सौ चालीस रुपये हुये। तो हम लोगों को अच्छा माल हाथ लगा"।

वालिद ने कहा "बेशक अगर इन की कीमत वसूल हो सके वरना जिन कागज़ों को हम जला चुके हैं ये भी वैसे ही हैं"।

"क्यों?" मैंने कहा "इनके पेश करने पर बेशक रुपया मिल जायगा"।

वालिद ने कहा "तुम नहीं समझते ऐसा करने से हम लोगों की गिरफ़्तारी हो जायगी पस बेहतर है कि इन्हें भी जला डालो"।

मैंने कहा "जी नहीं, मैं कह सकता हूं कि अगर मैं कमाल खां का गुमाश्ता बन कर इन्हें कोठी में पेश करूंगा तो बेशक रुपया वसूल कर लाऊंगा"।

वालिद ने कहा "जैसी तेरी मर्ज़ी मगर याद रक्खो बगैर मेरी सलाह लिये इस बारे में हर्गिज़ कोई कारवाई न करना"।

मैंने कहा "जी बहुत बेहतर"—सो मैंने उन्हें अपने पास रख लिया।

तेरहवां अध्याय।

चूंकि उस गांव से हम लोग दूसरे दिन रवाना होने को थे मैंने ख्याल किया कि मोहनलाल से रुखसत हो आऊं पस मैं शाम को उसके मकान पर गया और उस्से मुलाकात हुई।

बादजां साहब सलामत के जब हम बैठे मोहनलाल ने पूछा "सो उस बदमाश से आप कुछ भी इकरार न करा सके, ये चोट्टे निहायत सख़्दिल होते हैं गोकि मैंने सैकड़ों को आगे भी फांसी चढ़वाया है मगर किसी ने भी एक लफ्ज़ न क़ुबूल किया"।

मैंने कहा "मैं उस्से कुछ भी इकरार न करा सका, वह बोला कि मैं अपने काम का ईमानदार हूं और मेरी मौत होना ही बेहतर है"।

मोहनलाल ने कहा "खैर अब उसकी बातें करना फ़ुज़ूल है वह मर गया, और मैं चाहता हूं कि उसके दूसरे साथी भी उतने ही ऊंचे लटकाये जाते तो बेहतर होता; मगर मीर साहब आप के चले जाने के बाद एक अजीब खबर मैंने सुनी है, मुझे आप के बतलाने में कोई हर्ज नहीं है और शायद आप मेरी कुछ मदद कर सकें।"

मैंने कहा "आप बेशक हुक्म कीजिये जो कुछ खिदमत मुझ से हो सकेगी बसरोचश्म बजा लाऊंगा मैं तो आप की मेहरबानी का शुक्र किसी तरह अदा नहीं कर सकता"।

उसने कहा "बात यह है कि अर्सा दो या तीन बरस का होता है कि एक शख़्स बनाम सैयद महम्मदअली जो हैदराबाद में किसी आली खानदान से था शहर से एक चिट्ठी निर्मल के हाकिम के नाम ले कर आया जिस में यह हुक्म लिखा था कि अगर उस ज़िले में कोई जगह तहसीली की खाली हो तो इस शख़्स को तहसीलदारी का काम सुपुर्द करना। चन्द रोज़ तक वह शख़्स मेरे दोस्त उस हाकिम के पास रहा और जब मौका आया तो उसने उसे निर्मूल के करीबही अपना नायब याने डिप्टी, तहसील में मुकर्रर कर दिया, हाल में ऐसा हुआ कि वह शख़्स तहसील का रुपया न जमा करता था और हा-

किम को उसके लिये सख़ मुश्किल दरपेश आई; चंद शिकायतें जो खुफ़िया तौर से उस के पास पहुंची इस से हाकिम का शक और भी पक्का हो गया। इस बातमें ज्यादा पुख़गी तब पाई गई जब यह मालूम हुआ कि उसने अपना तमाम असबाब चुपके से न जाने कहां भेज दिया—और तिस पर तुर्रा यह कि आज सुबह से न तो उसका और न उसके लोगों का कुछ पता है"।

मैने कहा "यह बड़े ताज्जुब की बात है लेकिन चूंकि मैने इस शख़्श का नाम कभी पेश्तर न सुना था मै ठीक नहीं कह सकता कि मैं क्यों कर आप या आप के दोस्त को कोई मदद पहुंचा सकता हूं"।

मोहनलाल ने कहा "शायद आप कुछ करसकें, मेरी यह इलतिजा है कि आप अपने सफ़र मे उसका ख्याल रक्खें और अगर वह आप को मिल जावे तो आप फौरन् उसे गिरफ़ार कर के अपने चंद लोगों के साथ उसे मेरे पास भेज देवें और मैं इकरार करताहूं कि इस देर या तकलीफ के लिये मैं उस शख़स को अच्छा ईनाम दूंगा। एक बात मैं आप को यह बतला देता हूं कि अकसर कई मर्तबे उसने अपना नाम कमालखां रख लिया था—मैं ख्याल करता हूं कि यह नाम उसके किसी रिश्तेदार का है जिसने उसे गोद लिया था और शायद इस सफर मे भी उसने अपना यही नाम कायम रक्खा हो"।

मैने कहा "मैं हर्गिज़ इसे न भूलूंगा और आप यकीन रखिये कि अगर वह रास्ते में मुझे मिल गया तो मै फौरन् उसे गिरफ़ार कर लूंगा, और अगर आप अपने दस्तखत और मोहर के साथ एक पर्वाना मुझे उसके कसूरों का लिख देवें तो उस्से मुझे उसकी गिरफ़ारी के लिये एक तरह का इख़्तियार हासिल हो जायगा"।

मोहन लाल ने कहा "बेशक आपका ख्याल निहायत उमदा है मैं अभी हुक्मनामा लिख देता हूं"। इतना कहकर उसने एक पर्वाना लिखकर मोहर करवा मेरे सुपुर्द किया।

मैने कहा "मैं कुछ ऐसा फाजिल तो नहीं मगर तोभी कुछ पढ़ सकता हूं, इतना कह कर मैने वह कागज़ पढ़ सुनाया और उसका मज़मून वही था जो मैं आपसे पेश्तर बयान कर चुकाहूं"।

फिर मैंने कहा "तो अब आप मुझे रवाना कीजिये क्योंकि मुझे अभी अपनी लोगों मे बहुत काम है और दिन भी अनकरीब खतम हो चला है"।

मोहन लाल ने कहा "मैं भी आप को अब अटकाया नहीं चाहता हूं, अगर कोई खिदमत मुझ से या मेरे इस गरीब गांव से आपकी या आप केलोगों के लायक तो मैं बसरोचश्म बजा लाऊंगा। मैं अपने दोस्त को भी लिख देता हूं कि मैने क्या क्या बन्दोबस्त आप के साथ किये हैं और मेरा किस कदर एतबार आप पर है"।

मैंने कहा "मैं आप के इस मेहरबानी का शुकरिया अदा करता हूं अगर मुझे किसी चीज़ की खाहिश होगी तो मैं अर्ज़ करवा दूंगा—सलाम।"

उसने कहा "सलाम—खुदा आप का मददगार और पर्वदिगार है"।

मैने चलते चलते कहा "मै आपका निहायत ममनून् हूं" फिर अपने दिल में ख्याल करने लगा कि इनशाअल्ला खुदा की मर्जी है तो जैसे अब तक कामयाबी हासिल होती आई है आइन्दे भी होगी। खूब हुआ कि महम्मद आलीने अपने किये का फल पाया, और उस के लिये भी बेहतर हुआ कि वह बा,आराम कब्र मे सोया है वरना जीता रह कर रात दिन उसे उन लोगों का खौफ़ बनाही रहता जिन्हें उसने धोखा दिया है जो उसे गिरफ़ार करने पर कैदखाने मे सड़ानें के बनिस्बत बदन को अज़ीयत देदेकर मार डालते।

दरहकीकत अब तो बहुत कुछ काम निकला चाहै, और मेरे वालिद कैसा कहकहा मारकर हँसेंगे जब कि वे सुनेंगे कि मैने क्योंकर मोहनलाल को भी धोखा दिया और यह कागज़ भी लिखवा लिया। मैने उसका असली नाम भी मालूम कर लिया और अब इस इस पते से हुंडियों का रुपया वसूल करलेना कुछ मुश्किल बात नहीं है मेरे वालिद तो इन्हें जलाकर बरबाद ही कर चुके थे। शाबाश! अमीर अली! बस इसी तरह चला जा और किस कुत्ते की ताकत है कि होशियारी अकलमंदी या बहादुरी में तेरा मुकाबिला कर सके"।

जब मैने अपने वालिद को यह तमाम अहवाल सुनाया तो वे दरहकीकत खूब ही हँसे और बोले कि—

"यह भी एक बड़ी दिल्लगी होगी कि अगर कमाल खां का सिर मंगा कर

शहर के फाटक पर लटका दिया जाय तब इन लोगों के दिल में जरा चैन आ जायगा और इसमें कोई शक नहीं कि मोहनलाल का दोस्त जिसने माल गुजारी का रुपया आराम से हजम किया होगा थोड़ा बहुत उसमें से निकाल कर बतौर ईनाम के दे सके"।

मैंने कहा "अल्लाह जानता है दरहकीकत बड़ी दील्लगी होगी अच्छा मैं दो एक लुघाइयों को भेज कर उसका सिर मँगवाता हूं"।

वालिद ने कहा "नहीं नहीं मैंतो फकत दिल्लगी करता था, इस वखत शाम हो गई है और उस खतरनाक वीरान रास्ते पर अपने लोगों को रात के वक्त भेजना ठीक न होगा, सिवाय इसके वे हमारे रवाना होने के पेश्तर वापिस भी न आ सकेंगे"।

मैंने कहा "जैसी आपकी खुशी" मगर दिल में मैंने उसी वक्त इरादा किया कि दो एक लुघाइयों से इसका जिक्र तो करना चाहिये।

जब मै खेमे में पहुंचा मैंने तीन होशियार और मजबूत दिल लुघाइयों को बुलाया और कहा "देखो एक दिलेरी का काम तुम लोगों के लिये है अगर कर सको तो ये पांच रुपये तुम्हें इनाम हैं"।

उन्होंने कहा "आप का फर्माना सरोचश्म पर है आप फकत हुक्म दीजिये और हम लोग हाजिर हैं"।

मैंने कहा "तो मुझे कमालखां का सिर चाहिये तुम्हें क्या वह मुकाम याद है जहां उसे दफन किया था, उसकी कब्र क्या ज्यादा गहिरी है"?

उनमें से एक ने जिसका नाम मोतीराम था कहा मुझे वह मुकाम खूब याद है वह लुघा क्या जो किसी को दफन कर मुकाम भूल जाय, कबर बहुत गहरी नहीं है और कमाल खां सब के ऊपरही रक्खा है। मगर ये तो कहिये कि उसका सिर क्या किया जायगा? और उसकी क्यों जरूरत है।

मैंने उन्हें मोहनलाल का तमाम अहवाल सुनाया और कहा कि अगर उसका सिर किसी उमदे मौके पर रखदिया जाय तो यह बड़ी दिल्लगी होगी।

मोती रामने कहा तो अगर मेरी सलाह ली जाय तो मैं यही कहूंगा कि जिस दरख्त के तले वह चोर आज सुबह को फांसी दिया गया था उसी जगह

यह सिर रखदिया जावे तो वेशक मोहनलाल को यही ख्याल होगा कि वह डाकुओं के हाथ से मारा पड़ा है।

मैंने कहा यह ख्याल बहुत अच्छा है मगर जो लौटने पर तुम वहां किसी को न पाओ तो सिर रखकर चले आओ मुझे उसे देखने की कुछ ज़रूरत नहीं है।

उन तीनों ने कहा बहुत अच्छा सब काम आप के मरज़ी के मुताबिक किया जायगा, हम लोग अभी रवाना होते हैं।

सो वे मुझसे रुख़सत हुए मगर उनके जाने के बाद मुझे यह ख्याल हुआ कि मैंने यह काम अच्छा नहीं किया, शायद उन पर कोई वारदात हो। मैं बार बार अपने किये पर पछताता था मगर अब क्या हो सकता था वे बहुत दूर निकल गये थे, मुझे इस तफ़क्कुर में आधी रात तक नींद न आई। बिचारी जोहरा मेरी तबीयत का हाल कुछ भी न जानती थी, मैंने उससे कहा कि आज मेरी तबीयत अच्छी नहीं है और सिरमें निहायत दर्द है। उसने और उसकी बुड्ढी दोनों ने मेरे कनपटी पर चूना लगा दिया और बहुत सी दवाइयां लगाईं और आखिरकार जब मैं सोने का बहना करके उठ गया तो वह भी लेटी और सो गई।

आधी रात तक मैं इसी फ़िक्र में पड़ा था कि यकबयक मोतीराम की आवाज़ खेमे के दरवाज़े पर सुनाई दी। मैं फ़ौरन् उठ खड़ा हुआ और बाहर निकल आया, आतेही मैंने बड़े इश्तियाक से पूछा "सब खैरियत है"।

उसने जवाब दिया "सब खैरियत। हम लोगों ने उसका सिर लाकर जहां आपने हुकुम दिया था रख दिया है। बेहतर हुआ कि हम लोग वहां पहुंच गये क्योंकि हमने देखा कि बहुत से गीदड़ उसकी क़ब्र को पंजों से खोदने में मशग़ूल थे और सुबह तक लाशों को बेशक निकाल लेते क्योंकि हमारे पहुंचने तक उन्होंने एक बड़ा सूराख कर लिया था। खैर हम लोगों ने उन्हें भगा दिया औ थोड़े से सूखे कांटे जो वहीं पड़े थे क़बर पर डाल दिये हैं, अब वे शायद कोशिश न करें और अगर करेंगे भी तो कुछ परवाह नहीं क्योंकि कोई उस मुकाम को नहीं पा सकता, वह ऐसे ही मौके पर चुना गया है।

मैने कहा "तुमने अपना काम बखूबी और दिलेरी के साथ किया है। कल सुबह को तुमको इसके लिये इनाम मिलेगा"। पस वे रुखसत हुये और बसबब तबीयत ठंढी होने के मै लेटतेही जल्द सो गया। दूसरे दिन हम लोग अलस्सुबह उठे। सगुन विचारा गया और उमदः निकला सब लोग सफ़र की तयारी करने लगे। हम लोग फौरन् तयार होगये और जब मैने देखा कि ज़ोहरा बाबाराम अपनी गाड़ी में सवार हो चुकी और किसी बात की हाजत नहीं है तो मेरे दिल में आया कि एक बार उस दरख़ तक जाकर जहां वह चोर फांसी दिया गया था देखआऊं कि दरहकीकत कमालखां का सिर वहां रक्खा है या नहीं। बस मै फौरन् अपने लोगों से जुदा होकर उस तरफ को तेज़ दौड़ा और जल्द वहां पहुच गया। साहब जब में उस दरख़ के पास पहुंचा और कमालखां का सिर वहां पड़े देखा मै नहीं कह सकता कि क्यों मेरा तमाम बदन एकबारगी सनसना उठा।

हवा जो तमाम रात बन्द थी सुबह होतेही चलने लगी और उसका पहिला झकोरा जो उस नीम के दरख़ के सूखे डालों में से होकर आया गोया मुझ से उस गज़बनाक वारदात का ज़िक्र करता था जो शब को हो चुकी थी जिस्का सबूत निगाहों के सामने रक्खा था, एकबयक मेरी निगाह कामलखां के सिर पर जा पड़ी जिसे मेरे लोगों ने गीदड़ों से हिफाजत के लिये दरख़ की एक निकले हुये शाख़ पर रख दिया था। मुझे यह देख कर निहायत नफ़रत हुई क्योंकि उसकी आंखें निकलीं और मुंह कुछ खुला था और उसकी शकल देखने से निहायत खौफ़ मालूम होता था। मैने एक लहमे भर उसे बग़ौर देखा और ख्याल किया कि यह बात ठीक नहीं है इन आंखों से हम पर ज़रूर शुबहा होगा। पस मैने उस सर्द सिरको नीचे उतार कर उसकी आखें भीतर ढकेल कर पलक बन्द करदीं। तब मैंने उस सिर को दरख़ के पास एक बड़े पत्थर पर जिस्में कोई पुरानी मूरत खुदी थी रख कर रास्ता लिया और तेज़ चलने लगा, रास्ते में मुझे एक छोटा सा गड़हा पानी से भरा हुआ मिला मैने थोड़ी सी मिट्टी लेकर अपना हाथ खून से साफ़ किया जो तमाम उंगलियों में लग गया था। मैने दिल में कहा शुक्र खुदा का कि

मेरा हाथ साफ़ हो गया गोकि मैं अपने तईं दिलेर समझता हूं और किसी जिन्दः शख्स से खौफ नहीं खाता तो भी मैं हर्गिज़ मोतीराम और उस के साथियों के हमराह लाश खोद कर सिर काटने न गया होता चाहे तमाम दिल्ली की हशमत भी मेरे आगे रखदी जाती। आह! उसके ख्याल करने से खौफ़ लगता है। मैं उठ खड़ा हुआ और तेज़ी के साथ दौड़ता हुआ अपने लोगों में फ़ौरन् पहुंच गया।

मेरी गैरहाज़िरी का किसी को भी ख्याल न हुआ और यंही बहुत अच्छा हुआ पस मैं अपने घोड़े पर सवार होकर ज़ोहरा की गाड़ी के हमराह जो सब से आगे थी चलने लगा।

हमलोग मंज़िल पर पहुंच कर आराम कर रहे थे कि इतनेही में एक सवार मोहनलाल का खत लेकर पहुँचा जिस पर हम लोग निहायत खुश हुये। उसमें लिखा था कि क्योंकर कमाल खां का सिर यकबयक दरख्त पर कटा हुआ पाया गया और उसे मोहनलाल के लोगों ने पहिचाना, मगर साथही यह भी इलतिजा उसमें लिखी थी कि जब तक मेरे (यानी मोहनलाल के) दोस्त निर्मूल के हाकिम को बसबब कमाल खां के भाग जाने के रुपया वसूल न होजावे तब तक मैं इसका ज़िक्र किसी से न करूं। यह ठीक मेरी तबीयत के मुताबिक हुआ और अब मुझे पक्का यकीन हुआ कि अब कमालखां की हुण्डी का रुपया ज़रूर वसूल हो जायगा।

इसके बाद पांचवे दिन सुबह को हम लोग हैदराबाद पहुंचने को थे। मालूम हुआ कि शहर यहां से सात कोस पर है पस हम मुताबिक दस्तूर के अलस्सुबह रवाने न हुये, क्योंकि हमारी ख्वाहिश शहर में दिन के वक्त पहुंचने की थी ताकि हमारे गरोह की ज़्यादती के सबब किसी तरह का शक व शुबहा हम लोगों पर आयद न हो इस लिये हम लोग तीन हिस्सों में बट गये, एक तो मेरे वालिद के मातहत, दूसरा मेरे और तीसरा हिस्सा सरफराज़ नामी एक शख्स के मातहत हुआ जो मेरे वालिद का पुराना दोस्त था और रास्ते में मुलाकात होजाने से हम लोगों में शामिल होगया था। सबकी यह सलाह ठहरी कि कारवांन सराय में जहां मुसाफ़िर ठहरते हैं और जहां हम

लोगों को हर तरह का आरम रहेगा मुलाकात होनी चाहिये। मेरा गरोह सब से औव्वल रवाना होने को था, वालिद ने कहा कि मैं गठड़ी और असबाब के साथ रहूंगा और आहिस्ते २ आउंगा क्योंकि इस तमाम मालपर मुझे कई मुकामों पर चुंगी याने सरकारी महसूल देना होगा।

पस हम लोग दिन चढ़े रवाना हुये। सुबह का वक़् निहायत खुशनुमा और सर्द था, ठंढी २ हवा चल रही थी पर ताहम् वहां उतनी सर्दी न थी जैसी हमारे मुल्क में इधर होती है जहां अकसर बसबब ओस के ज़मीन वो घास तर होने के बाइस मुसाफिरों के पैर चलने से भींग जाते हैं, ताहम् मैं अपने मामूली पोशाक के सिवाय एक उमदा वेशकीमत दुशाला ओढ़े था।

सड़क की बांई तरफ़ पहाड़ पर कोहिरा इस कदर छाया था कि पहाड़ के नीचे का बहुत बड़ा तलाब मुतलक़ दिखलाई न पड़ता था; कभी २ जब हवा तेज़ बहती कोहिरे का बादल हिल जाता और नीचे से बड़े २ चट्टान व पत्थर दिखलाई पड़ते जो मैंने अपनी ताउम्र न देखे थे मालूम पड़ता था कि गोया इनसान ने किसी बड़े कल या पेंच के ज़ोर से इन्हें एक दूसरे के ऊपर रख दिया है। तिलङ्गाना में दाखिल होतेही मुझे सब से औवल इन पहाड़ों को देख कर निहायत ताजुब हुआ और मैंने बद्रीनाथ से इसका ज़िक्र कर अहवाल पूछा और उसने फ़ौरन् जवाब देकर मेरे शक को रफ़ा किया।

बद्रीनाथ ने कहा कि "शायद आपने हम लोगों की पवित्र पुस्तक रामायण का नाम सुना होगा जिसमें श्रीरामचन्द्र और राक्षसों की लड़ाई का हाल लिखा है। झगड़े का सबब यह था कि रावण नामी एक राक्षस श्री रामचंद्र जी की स्त्री सीता को हर ले गया और लङ्का के टापू में राक्षसों के पहरे में रख दिया। श्रीरामचंद्र जी को अपनी स्त्री के हर जाने से बड़ा दुःख हुआ और उन्हें किसी तरह पता न लगता था कि उसे कौन और कहां उठा ले गया। आप जानतेही हैं कि हम लोगों में बान्दरों के सरदार हनुमान बड़े बीर और बली थे। आजकल के बन्दरों में फकत उनकी शकल रह गई है और अकल जाती रही तोभी चंचलपन अब तक कायम है। मगर अफ़सोस है कि आदमी भी इन दिनों के बड़े खराब हो गये हैं और जैसे बन्दरों में हनुमान

जी की छाया रह गई है वैसे हम लोगों में भी अगले जमाने के बड़े लोगों की फकत एक छायाही कायम है। खैर सीता को खोजते २ श्रीरामजी की मुलाकात हनुमान जी से हुई और उन्होंने उनकी मुलाकात बन्दरों के राजा सुग्रीव से कराया जिसने सीता के तलाश मे अपने बन्दरों के भेजने का वादा किया। हनुमान जी समुन्दर कूद कर लंका में गये और खोजते २ सीता जी को बड़े दुःख में पाया। यह खबर लेकर हनुमान जी वापस आये और लंका फतह करने के लिये फौज् तयार की गई। जब समुन्दर के किनारे पहुंचे तो उसकी ऊंची ऊंची लहरों को देखकर सब डर गये और पार उतरना निहायत मुशकिल हुआ। नाव या जहाज वहां कोई न मिलता था और अगर मिलता भी तो लाखों करोड़ों देवता जैसी फौज के पार उतरने में उससे क्या मदद मिलती! आप जान रखिये कि एक एक बन्दर उनमें दस दस हाथ ऊंचा था। हनुमान जी ने श्रीरामचन्द्र जी से कहा कि हम लोग जल्द पुल बनालेंगे और इस काम में सब कोई रात दिन मेहनत करेंगे"।

बस बात की बात में लाखों बन्दर हिमालय पहाड़ की तरफ उठ दौड़े। बड़े बड़े पहाड़ों को जड़ से उखाड़ लिया और हवा में ले उड़े। तमाम बन्दर एक एक करके पहाड़ों को ऊपर से समुन्दर में फेंकने लगे जिनके गिरने से लहर आसमान तक उठतीं और बड़ा शोर होता था। आखिरकार पुल तयार होगया, फौज् ने चढ़ाई करके लंका फतह की और सीता जी को लाकर श्री रामचन्द्र से भेंट कराई।

ये सब पहाड़ जो आप देखते हैं उन्हीं में से बचे हुये हैं जो हिमालया से लाये गये थे और अब तक उसीतरह पड़े हैं जैसा बन्दरों ने इन्हें उसवक़्त रक्खा था; और चूंकि यह मुकाम हिमालया और पुल के आधे रास्ते में पड़ता है इस लिये तमाम बन्दर यहीं आकर ठहरते और सुस्ताते थे, जब पुल बन कर तयार हुआ इन पहाड़ों की कुछ जरूरत न हुई और ये यहीं पड़े रह गये। जो कुछ मैंने कहा है इसकी सचाई सुबूत करने के लिये आप चाहें तो देखलें कि पुल के निशानात अब तक दिखलाई पड़ते हैं। मैने बहुतेरे यात्रियों से जो रामेश्वर से लौट कर आये थे बात चीत की है और वे कहते थे कि हमलोग

नावों में बैठ कर पुल के किनारे २ बहुत दूर तक हो आये हैं। यह पुल इस पार से उस पार तक ठीक सीध में बंधा है, कहीं कहीं लहर की ज़ोर से अब टूट भी गया है। यहां से रामेश्वर तक बराबर आप जा बजा इसीतरह पहाड़ों का ढेर पाइयेगा जिनकी जरूरत पुल बंध जाने पर न पड़ी, और आप यह भी देखतेही हैं कि इन मुलकों के उत्तर इस किस्म के पहाड़ कहीं नहीं पाये जाते इस लिये हमारे मजहब के सब से पुराने और सच्चे होने का सबूत इस्से बढ़ कर और क्या हो सकता है जो दुनियां के आखीर तक कायम रहेंगे और तमाम दूसरे झूठे और फरेबी मजहब वाले गारत हो जांयगे"।

मैने कहा "माशाअल्ला यह तो अजीब किस्सा है और दरहकीकत सच मालूम होता है क्योंकि उसपुल का जिक्र तो मैंने भी सुना है। हमारे मुसलमानों में लोग यों बयान करते हैं कि बाबा आदम को अल्लाताला ने सरंद्दीप के टापू में जिसे आप लोग लंका कहते हैं रक्खा था। बाबा आदम अपने उसछोटे से टापू में रहते २ घबड़ा गये और हिन्दोस्तान की ज़मीन को दूर देखकर यहां आने के लिये बड़े २ पहाड़ों को सात सात कोस की दूरी पर समुन्दर में डाल कर पुल बनाया। जब इस तरह पुल तयार होगया तो वे बाआसानी एक दूसरे पर पैर रख कर यहां हिन्दोस्तान में आगये, मगर उनकी यह कारवाई अल्लाह ताला की नाराजी का बाइस हुआ जिसने उन्हे बिहिश्त से निकाल दिया और तब से इनसान इधर उधर मारा मारा फिरता है।

बद्रीनाथ ने कहा "मगर मेरा बयान ज्यादातर काबिल एतबार के है खासकर जब आप देखते हैं कि ये सब पहाड़ और पत्थर एक दूसरे के ऊपर बतौर बोझ के लादे हुये हैं। अगर किसी शख्स को पत्थरों का ढेर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना होता तो क्या वह ठीक इसी तरह उन्हें एक दूसरे के ऊपर न रक्खेगा? देखिये ये सब अलग अलग ढेरों में जमा हैं जैसे एक दूसरे के ऊपर रक्खे हों कोई छोटा कोई बड़ा है याने जिसकी जैसी ताकत थी वह उतना बड़ा पहाड़ का टुकड़ा उठाता था।

मैने कहा "अल्लाह की कुदरत है! माशाअल्ला वे बन्दर भी बहुत बड़े होंगे। बेहतर हुआ कि अब उनमें से कोई नहीं है वरना उन्होंने तो हम लोगों को पत्थरों ही से मार डाला होता।

को देखा, गोकि उसकी खूबसूरती वैसीही थी मगर जैसा असर मुझ पर औ-वल मर्तबे हुआ था दुबारा वैसा न हुआ, मगर उसवक़ तबीयत में नौजवानी और ताकत का जोश निहायत ज्यादा था और मुझे नामवरी हासिल करने की बहुत उम्मेद थी।

एक एक करके ज्यों ज्यों मेरे ठग आते थे हर एक शहर के खूबसूरती की तारीफ करता और यही कहता कि जैसी तारीफ इसकी सुनते थे दरहकीकत इसे वैसाही पाते हैं। कारवान का नजदीकी रास्ता पूछ हम लोग वहां से उतरे और बेशुमार गली कूचों से होते हुये सराय में पहुंचे और यहां हमारी सफर ते हुई। हम लोग रास्ते की हिफाजत और कामयाबी के लिये खुदा-ताला के निहायत शुकर गुजार हुये। उस वक़ तो हमने अपना डेरा सराय में कर दिया जहां एक निहायत वसीह और खूबसूरत मसजिद थी और अ-पने सुभीते और आराम के लिये मैं किसी खाली मकान की तलाश में गया और बाद कुछ देरतालाश करने के एक छोटा सा मकान जो पड़ोस के सौ-दागर का था किराये पर मिल गया। इसमें तीन कोठड़ियां और बरामदे बतौर दूकान के थे बस इतनी जगह मेरे और वालिद के लिये काफी थी, हमने अंदर की कोठड़ी में जिस में मजबूत दरवाजे लगे थे अपना तमाम बेश-कीमती असबाब बंद करके ताला लगा दिया।

ज़ोहरा अपने पैदाइश के शहर को जहां दरहकीकत उसका मकान था देखकर निहायत खुश हुई। वह अपने उस खुशी का जिक्र कर रही थी जो उसे अपने रिश्तेदारों और हमजोलियों के मुलाकात से होगी और कहती थी कि वे लोग मुझे यकबयक देख कर हैरत में आ जायगी क्योंकि जब से मुझे नवाब साहब यहां से ले गये वे सब समझते थे कि मैं अब किसी तरह वापस न आ सकूंगी। उसे इस बात का मुतलक ख्याल न था कि ज्योंही वह उन लोगों के हाथ में पड़ेगी त्योंही वह मुझ से अलग कर दी जायगी, बस मैंने उसे अपने दिल का खौफ समझा दिया और कहा कि मुझे तुम्हारी मुह-ब्बत पर ज्यादा एतकाद है, देखना मुझे कहीं धोखा न हो।

उसने कहा "आप हरगिज ऐसा ख्याल न फर्माइये"।

साहब! जिस सौदागर के मकान में हम लोग ठहरे थे वह हम से निहायत खुशअखलाकी और मेहरबानी से पेश आता, खास कर इस बाइस से कि वह हैरत में था कि हम लोग कौन हैं और हमारी क्या गर्ज है। मैंने उसे वही पुराना किस्सा सुना दिया कि मेरे वालिद सौदागर हैं मैं एक सिपाही हूं जो किस्मत आजमाई के लिये उन के साथ रोजगार की तालाश में आया हूं। अब उसे इस बात के जानने की ख्वाहिश हुई कि मेरे वालिद किन चीजों की सौदागरी करते हैं क्योंकि उसने कहा कि मैं उन्हे अपने आढ़त के ज़रिये फरोख़ कर सकता हूं, मगर हम लोगों ने उस के इस सवाल का जवाब कुछ भी न दिया। सबब यह था कि मेरे वालिद ने मुझसे कह दिया था कि—

"हमारे पास तमाम असबाब बेशकीमती है और मैं उन की ठीक कीमत नहीं जानता और न मैंने अबतक उन गठड़ियों को खोला है, कल सुबह गठड़ियों को खोलकर असबाब छांट डालें और बादज़ां किसी साहूकार की दूकान पर चल कर वैसेही माल की तालाश कर कीमत दर्य्याफ्त करेंगे और उसी से अपने इस माल की कीमत का अन्दाज कर लेंगे। अगर हमलोग बगैर बाजार का दर जाने इनको फरोख़ करेंगे तो शायद हमलोंगों पर शुबहा हो और गोकि इनकी वाजिबो कीमत हमें न मिलेगी ताहम् इसमें कोई शक नहीं कि तमाम असबाब फ़रोख़ करने पर अच्छा माल हाथ लगेगा।

मेरीभी यही राय हुई और दूसरे दिन सुबह को हमलोग गठड़ियां खोलनेलगे।

साहब दरहकीकत उनमें निहायत बेशकीमती माल निकला। किमखाब, सोनहली साड़िया, सोने और चांदी के कामदार मलमल के रूमाल, चंद दुशाले, और हर किस्म के उमदे २ पहिनने के कपड़े, रेशमी किनारे की साड़ियां नागपूर की बनी हुई वगैरह—जब इसतमाम असबाब और जवाहिरात को हम लोगों ने निगाह के रोबरू ज़मीन पर फैलाया तो उनकी खूबसूरती और कीमत का ख्याल करके हमारी आंखें खुल गईं और बादज़ां एक फिहरिस्त तयार करके मैं और वालिद दोनों अपने २ घोड़े पर सवार हो चंद लोगों को साथ ले शहर की तरफ़ रवाना हुये।

रास्ते में एक बहुत भारी पुराना पुल मिला जिसके नीचे उस वक़्त एक

छोटी सी नदी बहती थी, इसके आगे एक फाटक था वहां से बढ़कर हम लोगों ने चौक का रास्ता पूछा और उधरही को चले क्योंकि वहां ऐसे माल के मिलने की उम्मेद थी। गलियां निहायत तंग और मैली थीं और शहर का अंदरूनी हिस्सा वैसा न था जैसा हम उसे दूर और बाहर से देख कर ख्याल करते थे तोभी दौलत व हशमत के निशानत अकसर देखे जाते थे कि बहुतेरे सेठ साहूकार हथियारबन्द नौकरों को साथ लिये अम्बारीदार हाथियों पर सवार नजर आते थे। सैकड़ों हजारों लोग उमदे २ लिवास पहिने अपने २ काम से चले जाते थे और चूंकि मोहर्रम का मौसम शुरू थी चारो तरफ से "हसन" "हुसैन" "दूला" "दीन" "दीन" की पुकार सुन पड़ती थी।

हम लोग भीड़ में से होते हुये आगे बढ़े, लोगों की खिलकत इस कदर जमा थी कि हमारे लोगों को रास्ता पाने के लिये राह चलतों को हटाना पड़ता था जो उनकी पोशाक और जबान सुन कर हँसते और परदेसी याने अजनबी जान कर अकसर गालियां भी दे देते थे। मैने यहां तक देखा कि एकाद मर्तबः जब हमारे लोगों ने किसी भलेमानस को धक्का दे कर रास्ते से हटा दिया तो उसने फौरन् तलवार के मुट्ठे पर हाथ धरा और सिर काट लेने के लिये धमकाया मगर हम लोग किसी की न सुन कर चले ही जाते थे और आखिरकार एक चौड़े सड़क पर पहुंचे जहां भीड़ कम थी; देखते क्या हैं कि हम लोग चारमीनार के साम्हने पहुंच गये।

मैने अपने घोड़े को रोका और उन बड़े मीनारों की तरफ़ जो गोया आस्मान से बातें कर रहे थे शिर उठाकर कहा "वाह! बेशक यह निहायत उमदी इमारत है और इस काबिल है कि फकत इसी के देखने के लिये दिल्ली से यहां तक की सफर की जाय"।

इमारत के चारो कोने पर चारमीनार हैं जिन के बीच में मेहराब के ऊपर एक छत्त पटी है,। इसके ऊपर एक छोटी सी मसजिद बनी है। उसकी शकल से नहीं मालूम होता कि यह छत इतना बोझा सम्हाल सकेगी मगर ताहम् सैकड़ों बरस से यह मसजिद योंही खड़ी है और इमारत भी कहीं से कुछ खराब नहीं हुई।

मैं हैरत से इन तमाम चीजों को देख रहा था कि वालिद ने मुझ से कहा कि अब नमाज़ का वक़ हो गया। सुनो, मक्का मसजिद से मुअज्जिन की आवाज़ सुनाई पड़ती है अब इस वक़ वहां चलना चाहिये वादजां हम लोग अपना काम देखेंगे।

मैं उनके हमराह हुआ और चारमीनार के आगे बढ़कर दाहिने हाथ की सड़क पर चला और मसजिद के फाटक पर घोड़ा खड़ा किया।

मसजिद के चौड़े दालान में पहुंचते ही जहां से सीढ़ी ऊपर को जाती है मेरे दिल पर कुछ हैरत और कुछ रोब छा गया। हमारे दाहिने ओर बायें दोनों तरफ़ शाहज़ादों और रईसों की कब्र बनी थीं जिनमें कई एक पर निहायत उमदा मोने कारी का काम किया हुआ था मगर मैं तो उस इमारत ही को देख कर हैरत मे आ गया था। अंदर की तरफ़ पांच ऊंचे और चौड़े मेहराब दिखलाई दिये जिनके अंदर कुछ दूर जाकर उनसे छोटे पांच और नज़र आये। जिस मुकाम पर एक मेहराब दूसरे से मिलता था वहां की बनावट, खूबसूरती और कारीगरी देख कर आंख न ठहरती थीं। मासिवाय इसके यह तमाम इमारत निहायत चिकने पत्थर की बनी थी मगर चार मीनार वगैरह दूसरे मकानात जो मैं पेश्‌तर देख चुका था निहायत उमदे चूने की लेट से बने थे।

लेकिन साहब इन सब चीजों के देखने की फुरसत मुझे न मिली, मुअज्जिन की लम्बी बांग खतम हो चुकी थी और चंद शख्सों ने दरी बिछाकर नमाज़ पढ़ना शुरू कर दिया था। हम लोग भी उनमें शरीक हुये और अपना २ कमरबन्द बिछा कर नमाज़ पढ़ने लगे। साहब उस तमाम हुजूम के आहिस्ते २ दुआ पढ़ने से जो एक तरह का शोर उठता था वह उस मुकाम को और भी संजीदा कर रहा था।

जो तमाम लोग वहां जमा थे उनमें से बहुतेरों के लिये यह कोई नई या नादिर बात न थी, मगर मेरे और चंद फांसीगरों के दिल पर इसका अजीब असर पैदा हुआ। गोकि मैं खूनी था मगर हनोज़ संगदिल न हुआ था इस लिये यह सब देख कर मेरा दिल पिघल गया और जब मैं कुरान शरीफ़ की

उन असरपज़ीर आयतों को दुआ मांगते वक़ पढ़ने लगा मेरे आखों से आँसुओं की क़तार बराबर बहने लगी।

नमाज़ खतम होने पर हम सब उठ खड़े हुये और गोकि मेरी तबीयत उस पाक इमारत की खूबसूरती के देखने से हनोज आसूदा न हुई थी मगर वालिद ने चलने की जल्दी की और हम लोग फिर चारमीनार की तरफ़ रवाना हुये।

वालिद ने कहा कि यहीं पर उन शरीर और दगाबाज दल्लालों से मुलाकात होगी। इसमें कोई शक नहीं कि वे हमे धोखा देने की कोशिश करेंगे क्योंकि उनका यही रोज़गार है मगर हम लोग कुछ खरीददार तो हई नहीं इसलिये उनसे मिलकर उन सौदागरों और साहूकारों की कोठी वगैरह दर्याफ़ करलेना चाहिये जिनके यहां हमारे जैसी चीज़ों का रोज़गार होता हो और अगलब है कि शायद हमें कोई होशियार दल्लाल मिल जावे तो हम लोग उसी के मारफ़त अपने इस माल के फरोख़ करने की कोशिश करेंगे"।

खैर चारमीनार के पास हम लोगों ने घोड़े रोके। इस इमारत के निचे का हिस्सा छोटी छोटी झोपड़ियों और दूकान से तमाम खराब हो गया है जहां ये कमबख़ कूंजड़े और हलवाई रास्ते में बैठ कर राह चलतों के हाथ तरकारी और मिठाई बेचा करते हैं। वालिद ने एक भलेमानस होशियार से हिन्दू को अपने पास बुलाकर पूछा कि हमे किसी दल्लाल की ज़रूरत है ताकि वह कपड़े और चंद किस्म के सामान जो हम खरीदा चाहते हैं दिखलावे!

उसने कहा "हुजूर ताबेदार हाज़िर है, मैं यहां की तमाम भारी २ कोठियां जानता हूं जहां हुजूर कहें मैं ले चलूं और शहर मे ऐसा कोई साहूकार या महाजन नहीं है कि जिसके यहां आप के इस खादिम मोहनलाल का एतबार और मातबरी न हो,,!

वालिद ने कहा "बेहतर है कि जब तक आप अपने काम को सुबूत न कर सकें तब तक अपनी तारीफ़ न करें इस बारे में आप के तमाम फिर्कों की नेकनामी बहुत कम सुनने में आती है"।

उसने कहा "बेशक हुजूर को हमारे बहुतेरे फिर्के वालों से काम पड़ा

होगा (गोकि मुझे न कहना चाहिये) वे अक्सर लुचे होतेहैं मगर इस ताबेदार को हुजूर हर्गिज़ वैसा न पावेंगे क्योंकि मैंने ईमानदारी से इस काम को शुरू किया और आज तक कभी ऐसा बेईमानी का मौका नहीं पड़ा"।

मैंने कहा" तो इसके यह मानी हैं कि जब तुम्हें अपने मतलब का मौका मिलजाय तो तुम बेईमान भी हो सकते हो। परखैर अब चलो दिन बहुत कम रहगया है और हम लोग शाम के पेश्तर इस भीड़ से वापस आया चाहते हैं"।

उसने मेरी तरफ़ देखा और एक बेर कंधा उचका कर हमारे साथ चलता हुआ मगर हमारी इस बात चीत से उसे सुबूत हो गया कि हम लोग होशियार हैं"।

उसने पूछा "तो आप किस किस्म का माल तलाश करते हैं, यहां हर तरह का माल मिल सकता है, काश्मीर के दुशाले और बनारसी कमख़ाब से लेकर सल्लम तक दस्तयाब हो सकता है"।

मैंने कहा "मुझे बनारसी बाने की ज़रूरत है, चंद बेशकीमती रूमाल और दुपट्टे और दो चार उमदे दस्तार दीवान साहब के दर्बार में पहिन कर जाने लायक चाहिये"।

उस दल्लाल ने अपना दुशाला कमर में बांध कर कहा "तो आइये मैं आपको दिखला दूं देखिये मुझे खूब पहिचान रखिये ऐसा न हो कि इस भीड़ में कहीं साथ छूट जावे"। इतना कह कर वह सीढ़ी के नीचे उतरा और चंद गली कूंचों से होता हुआ एक तंग सी गली में चला और एक मकान के दर्वाजे पर जो बाहर से निहायत भद्दा जान पड़ता था ठहरा।

वालिद ने कहा कि "अगर हमें खुद कोई साहूकार इस किस्म का तलाश करना पड़ता तो बेशक बड़ी तकलीफ़ उठानी पड़ती, बेहतर हुआ कि हमने इस दल्लाल को अपने साथ ले लिया"।

"ये साहूकार लोग, मैंने सुना है कि हिफ़ाजत के लिये अक्सर ऐसे ही निराले मकान पसन्द करते हैं क्योंकि ऐसे बेकायदा और खतरनाक शहर में वे दूसरे शहरों के म्वाफिक सरेआम अपने माल की फ़रोख़ नहीं कर स-

कते। मगर उन्हें सब कोई जानते हैं और जहां किसी अजनबी शख्स ने हमारे म्वाफ़िक किसी दल्लाल से दर्य्याफ़ किया कि फौरन् उनका पता लग जाता है।

हम लोग मकान के अन्दर दाखिल हुये, और आगे से एक मोटा सा शख्स हमारे इस्तकबाल के लिये आया जिसकी शकल ठीक उस साहूकार की सी थी जिसे मैंने मारा था। मैं उसकी ऐसी मुशाहबत देख कर हैरत में आ गया मगर उसकी शराफ़त से निहायत खुश होकर बैठ गया; मेरे वालिद भी बैठे और हमने अपने आने का सबब बयान किया।

एक एक करके गठड़ियां खोल कर वे लोग तमाम माल हमारे आगे रखने लगे इस साहूकार के कारखाने में बेशुमार असबाब भरा था जिनकी किमत का हिसाब कौन कर सकता है। हमने उनमे से कई चीजें चुनलीं और उनकी कीमत वगैरह दर्य्याफ़ करके एक पर्चे कागज़ पर सब टांक ली और कहा कि इस माल को इलाहिदा रख छोड़िये हम लोग कल रुपया लेकर आवेंगे तो इनकी कीमत अदा करके ले जावेंगे। साहूकार ने कहा कि आप बेशक इन्हें ले जाइये और वह दल्लाल भी हमलोगों के लिये अपनी ज़मानत देनेलगा मगर हमारा तो मतलबही दूसरा था इसलिये हमने माल को साथ ले जाने में इन-कार किया और साहूकार से रुखसत होकर वापस आये।

वह दल्लाल भी हम लोगों के साथही साथ चारमीनार तक आया जहां मेरे वालिद ने उसे एक रुपया हाथ में देकर कहा कि यह तुम्हारे पान खाने के लिये है, हम लोग अब यहां से मकान को चले जांयगे क्योंकि रास्ता ह-मारा देखा हुआ है; तुम कल अलस्सुबह करवान सराय में आकर रघुनाथ दास साहूकार का मकान पूछ लेना वहां से हम लोगों का पता तुम्हें मिल जायगा।

खैर हम लोग रवाना हुये। रास्ते में वालिद ने कहा हमारा माल भी ठीक उन्ही माल के मानिन्द है जो हम लोग अभी देख आये हैं और उनकी कीमत दर्य्याफ़ करने से मालूम पड़ता है कि अगर हमारे माल की बिक्री हो जायगी तो अच्छी कीमत हाथ लगेगी और अगर उमदा तौर से इसका बन्दो बस्त किया जायगा तो इनका फरोख़ करलेना कोई मुश्किल बात नहीं है"।

दूसरे दिन सुबह को वह दल्लाल आया। वालिद ने फौरन् उसकी तरफ़ दो रुपये फेंक दिये और पूछा "क्या तू किसी बात को पोशीदा नहीं रख सकता" ? वह इतना सुन हैरत में आकर कांपने लगा और खौफ़ के मारे दांत निकाल कर हाथ जोड़ बोला—

"अगर हुज़ूर की ऐसी मर्ज़ी है तो मैं हर्गिज़ किसी से कोई बात न कहूंगा, मैं तो गरीब सीधा सादा आदमी हूं, इतना कहकर वह फौरन् मेरे वालिद के कदमों पर गिर पड़ा और ज़मीन से नाक रगड़ने लगा"। सबब उसका यह था कि उसे कुछ हम लोगों पर शक हुआ और फौरन् मेरे वालिद ने गुस्से से भौंह चढ़ा ली थी।

वालिद ने उसे ज़मीन पर गिड़गिड़ाते देखकर कहा "यह क्या ? तू कैसा बुज़दिल शख़्स है, उठ खड़ा हो अल्लाह के नाम पर, यह क्या बात है कि कोई शख़्स तुझे यह पूछे कि क्या तू कोई बात पोशीदा रख सकता है या नहीं और तू ख्याल करे कि मेरा गला ही काटा जाता है ?"

उस कमबख़्त ने अपनी आंखें बंद कर लीं और कांप कर कहने लगा मै तो गरीब बिचारा हिन्दू हूं हूज़ूर को मेरा गला काटने ही से क्या मिलेगा"

वालिद ने कहा कि "यह बड़ा नालायक है इसमें मच्छड़ के माफिक भी हिम्मत नहीं है इसे लात मार कर गली में निकाल दो और इसके मुंह पर जूता मारो, सैकड़ों दल्लाल सभी मिल सकते हैं"।

उसने जब दल्लाल का नाम सुना तो उसे ख्याल हुआ कि ये कोई रोजगार की पोशीदगी चाहते हैं सो हाथ जोड़ कहने लगा "कुसुर माफ़ कीजिये और मेरी बेवकूफी को छिमा कीजिये, हुज़ूर को गुस्से में देख कर मेरा दिल पानी २ होगया, पर अब हुज़ूर के चेहरे पर मुसकराहट देख मेरा जी ठिकाने होगया है और मुझे भरोसा हो गया कि अब कुछ खौफ़ की बात नहीं है"।

वालिद ने कहा "खौफ़ की बात, ! और तुझ कमबख़्त के लिये ! छि ! मगर खैर चूंकि तेरी अक़्ल अब दुरुस्त हुई है, तो बैठजा और सुन जो हम तुझसे कहते हैं"।

उसने कहा "हुजूर बेशक कहें मैं तमाम बात पोशीदा रक्खूंगा"।

वालिद ने उसकी तरफ ग़ज़ब की नज़र से देख कर कहा "और अगर तूने ज़ाहिर किया तो फिर तेरे लिये बेहतर न होगा, खैर सुन। मैं सौदागर हूं, आज तक कभी इस शहर में नहीं आया मगर दिल्ली में यह सुन कर कि यहां बनारसी माल की कटत ज्यादा है मैं उस किस्म का माल अपने साथ ले आया हूं जैसा कि कल हमने बाज़ार में देखा था। मुझे यहां के बाज़ार का दर मालूम न था इसलिये तेरे मारफत कुछ माल देखा ताकि मैं उसी दर से अपने माल का भी दर लगाऊं। अब कह तू हमारे माल के बिक्री करने का बन्दोबस्त कर सकता है या नहीं?"

उसने खुश हो कर कहा "बेशक. यह तो निहायत आसान बात है। मगर हुजूर मेरी मेहनत का भी लिहाज़ रक्खेंगे"।

वालिद ने कहा "तो खैर तुझे ५) सैकड़ा दलाली मिलेगी, बस इतना तेरे लिये काफ़ी है"।

उसने कहा "बस हुजूर और क्या चाहिये इतना तो मुझे राजा महाराजों से भी नहीं मिलता यह हुजूर की लियाकत है अच्छा तो अब मुझे माल दिखला दिया जाय।"

वालिद ने कहा "बेशक तुम्हारा देख लेना निहायत ज़रूरी अम्र है, यह देखो" इतना कह कर वालिद ने कोठरी खोल दी और एक एक करके उसे तमाम माल दिखला दिया॥

उसने कहा "बेशक यह माल निहायत बढ़िया है आप का बहुत. असबाब यहां बिक जायगा मगर जब तक आप यहां कुछ दिन न ठहरें तब तक तमाम माल की बिक्री के बारे में मैं ठीक जिम्मेदारी नहीं ले सकता।"

वालिद ने कहा "यह मैं नहीं कह सकता जैसा मौका होगा देखा जायगा अगर तमाम माल यहां फरोख़ न हो सकेगा तो मैं बाकी का असबाब पूना ले जाऊंगा॥"

उसने कहा "बहुत अच्छा अगर मुझे हुक्म हो तो मैं इस तमाम माल की एक फिहरिस्त बनालूं और कल तक जैसा भुगतान होगा आप से अर्ज क-

रूंगा, इस्से जल्दी नहीं हो सकता क्योंकि मुझे तमाम बेपारियों की कोठी में जाना पड़ेगा।

वालिद ने कहा जो तुम बेहतर समझो करो और यह १०) तुम्हारे खर्च के लिये हैं। खैर तो अब जाओ और कल इसी वक्त हाज़िर होओ।

वह इतना सुन सलाम कर रवाना हुआ। उसके जाने पर वालिद ने मुझ से कहा—"क्या कभी कोई ऐसा कमबख्त देखा था? इसे मैं दो कौड़ी के लिये भी यहीं पर खतम कर डालता।"

मैंने कहा "जाने दीजिये, यह हिन्दू है और इस लायक हर्गिज़ नहीं कि हमलोग इसके मारने की तकलीफ उठावें। मगर मैं समझता हूं कि जिस कद्र रुपये आपने उसे देने का वादा किया है वह आप हर्गिज उसे न देंगे"

वालिद ने कहा "हर्गिज़ नहीं, मैं ख्याल करता हूं कि तुमने मेरा इरादा समझ लिया होगा।"

मैंने कहा "बखूबी, यह काम आप मुझी को सुपुर्द कर दीजिये"।

साहब, इसके बाद मैं अपनी प्यारी ज़ोहरा के पास पहुंचा। वह मुझ से बार बार अपने रिश्तेदारों से मुलाकात करने के लिये कहती थी और गोकि मैंने उसे बारहा इस्से बाज आने के लिये कहा मगर वह न मानती थी, मैंने देखा कि अब इसका रोकना मेरे लिये बेहतर न होगा। अगर मैं चाहता तो उसे लेकर भाग गया होता। मैं उसे इस दिलोजान से प्यार करता था कि अगर मैंने हिम्मत बांध कर भाग चलने का इरादा उस्से ज़ाहिर किया होता तो वह फौरन् राज़ी हो जाती और मैं बिलाशक अपने वालिद, साथियों और रोज़गार को तर्क कर उसके साथ चला गया होता"।

अगर मैं दरहकीकत उसे ले कर भाग गया होता तो मेरी हालत क्या कभी इस्से भी बत्तर होती? क्या मैं कभी इन बेड़ियों और जंजीरों में गिरफ़ार होता? क्या मैं कभी इस बदबख्त जेलखाने में अपनी जिन्दगी सड़ाता? अब मैं चाहता हूं कि इस कमबख्त जीने से हाथ धोऊं और खुदा से दुआ मांगता हूं कि वह जल्द मुझे इस दुनिया से उठा ले क्योंकि मेरे इस बदनसीब, और नामर्द जीने से मरना कहीं बेहतर है! साहब, मैं फिर भी आप

से अर्ज करता हूं कि अगर मैं उस वक्त जोहरा के साथ भाग गया होता तो मेरे लिये बहुत बेहतर होता गोया मैंने दुनियां के तमाम गुनाह और कसूरों से नजात पाई होती जिन में मैं रोज़ बरोज़ ज्यादातर गर्क होता जाता था। मैंने अपनी सिपाहियाना शक्ल, वजहदारी, गुफ़ार और हथियार की होशियारी से कहीं न कहीं कोई इज्जतदार दर्जा पाया होता, या किसी फौज़ का अफसर मुकर्रर हो कर इस फानी जिन्दगी से जंग के मैदान में नेकनामी और इज्जत के साथ मैंने मौत का मुकाबिला किया होता, मगर ऐसा लिखा न था, मेरी किस्मत में वह नामवरी न थी और मैं यों का यों ही रह गया — अफ़सोस सद अफसोस और हैफ़ सद हैफ़ है मेरी इस कमबख्त और बदनसीब हालत पर !!!

खैर जो होना था सो हुआ — जोहरा को मेरे इस खौफ़ या इश्तियाक का मुतलक ख्याल न था वह अपनी मां और बहिन के मुलाकात की उम्मेद पर निहायत खुश थी वह मुझ से बार बार वहां जाने के लिये तकाज़ा करती और दिलासा देती थी कि मैं जल्द वापस आऊंगी मगर मुझे ज़रूर जाने दीजिये — सब लोग मुझे देख कर निहायत खुश होंगे और मेरा रिहाई-कुनिन्दा समझ कर आप की निहायत खातिरदारी करेंगे। उनसे मुलाकात कर के मैं आप के पास जल्द वापस आऊंगी और फिर ताउम्र मेरी और आप की जुदाई न होगी"॥

मैंने कहा "जोहरा अफसोस है! तुम नहीं जानतीं कि तुम क्या कह रही हो? क्या तुम ख्याल करती हो कि तुम्हारी मां और तुम्हारी बहिन तुमें पाकर फिर आने देंगी? खुद तुम्हीं मुझ से कई मर्तबः कह चुकी हो कि यहां तुम सब से ज्यादा खूबसूरत हो, तुमारे पीछे तो इन्हें कोई पूछता भी न होगा तो वे तुम्हारा वापस आना क्यां दुनियां की नायाब दौलत से किसी तरह कम समझेंगे?॥

उसने कहा "प्यारे, ऐसी बेरहमी की बातें न करिये, आप खूब जानते हैं कि मैंने आज तक कभी किसी तरह का फरेब या दगाबाजी की बात आप से नहीं की मैं तो हमेशा के लिये दिलोजान से आप ही की हूं मुझे आप जाने दीजिये और मैं दोही चार घंटे के बाद फिर आप से आकर मिलूंगी"॥

मैंने रंजीदः दिल से कहा "खैर, योंही सही, जाओ पर जो तुम जल्द वापस न आवोगी तो मैंहीं शाम तक तुमारे पास पहुंचूंगा"। मुझे उस वक्त कुछ ऐसाही ख्याल होता था कि शायद अब इससे मुलाकात न हो।

मैंने फौरन् एक जनानी पर्देदार गाड़ो किराये कर ली और गाड़ीवाले ने जब अच्छी तरह मुकाम का पता पूछ लिया तो जोहरा खुशी बखुशी गाड़ी में उस बुड्ढी के साथ सवार हुई और मैंने दो आदमी साथ २ उसकी हिफाजत में कर दिये, सो वह मुझ से रुखसत हुई।

मेरे वे दोनों शख्स थोड़ी देर के बाद वापस आये, और दर्याफ्त करने पर उन्हों ने इतना ही बयान किया कि हम लोग फकत इतना ही जानते हैं कि जोहरा के पहुंचने पर उस के रिश्तेदारों को निहायत खुशी हुई और तमाम मकान इस शोर और गुल से गूंज उठा। शाम होते होते मैं अपने दिल को हर्गिज थाम न सका, पस उन में से एक शख्स को ले कर घोड़े पर सवार हो उस के मकान की तरफ रवाना हुआ।

यह मकान चारमीनार से नीचे उतर कर फौहारे के ऐन साम्हने था और सुबह के वक्त मैं उधर ही से गुज़रा था। ज्योंही मैं मकान के अन्दर दाखिल हुआ और उस कमरे के साम्हने पहुंचा जहां ज़ोहरा, उस की मां और बहिन बैठी थीं कि यकबयक सब के सब मारे खुशी के उठ खड़ी हुईं और ज़ोहरा दौड़ कर मेरे सीने से लिपट गई और बोली "अम्मा, देखो मैं कहती थी न कि वे बड़े दिलेर और खूबसूरत हैं क्यों मेरा कहना ठीक है न?

उस की जईफ़ मां फौरन् मेरे पास आई और मेरी बलैंये लेने लगी, मारे खुशी के उस के आंखों से आसू की कतार बहने लगी। आखिर उस ने मुझे अपने बाजुओं में दबा लिया और ज़ोर से रोने लगी। उस की बहिन ने मेरा इस्तकबाल उस खुशी के साथ न किया अगर मैं इस कदर खूबसूरत न होता तो शायद वह ज्यादा खुश होती क्योंकि मुझे मालूम होता था कि वह इस बात का कुछ रश्क रखती थी कि ज़ोहरा ने मुझ सा खूबसूरत शख्स पाया।

जब उस बुड्ढी को बोलने की ताकत हुई वह कहने लगी, "बेटा रसूल अल्लाह और बारहो इमाम की बरकत तुम पर और तुम्हारे आल औलाद पर

हो, खुदाताला अपनी रहमत और हिफाजत तुम पर रक्खे और बीबी मरियम और मौलाअली तुम्हें बरकत बख्शें। तुमने इस बीरान घर को आबाद किया और हमारे रंज में राहत अता की, और मैं क्या कहूं? जिस वक्त दर्वाजे पर गाड़ी खड़ी हुई कौन कह सकता था कि इसके अन्दर मेरी प्यारी ज़ोहरा है। ज़ीनत बी कहती थीं कि वही कमबख़्त सकीना हमारी हमदर्दी दिखाने आई होगी पर दरहकीकत वह हमारे इस मुसीबत से निहायत खुश हुई है क्योंकि अब उस का मुकाबिला करने वाला कोई न रहा, मैं कहती थी अच्छा कुछ पर्वाह नहीं आने दो—बस इतना कहती ही थी कि बाहर से कुछ धीमी २ रोने की आवाज़ आई और कुछ लोग खुशी खुशी दिखलाई पड़ने लगे मैं कुछ भी न समझी कि क्या बाइस है, यकबयक देखती क्या हूं कि मेरी प्यारी ज़ोहरा, मेरी मोती, मेरी हीरा दौड़ी चली आती है, मुझे ऐसा मालूम पड़ा कि मेरा कलेजा मारे खुशी के फट जायगा, मेरा दिल पानी २ हो गया, तब से मीर साहब सिवाय उसके पास बैठ कर उसके मुंह की तरफ एकटक प्यार से देखने के मैंने और कुछ भी नहीं किया मुझे शक है कि मैं ख्वाब तो नहीं देखती। इन्शाअल्ला कल मैं पांच रुपये शहर के तमाम ज़ियारतगाहों में भेज दूंगी ताकि इमामज़ामिन के नाम पर पचास फ़क़ीर और मुफलिसों को मिठाई बांट दी जावे; सिवाय इस के मैं एक ताज़िया बनवाऊंगी और अब इन मातिमी कपड़ों को उतार दूंगी। मीर साहब; मैं क्यों कर आप से कहूं कि मैं शबोरोज़ इसी तरह बैठे २ रोया करती और सूख कर लकड़ी हो गई, मेरे तमाम हमसाये मुझे दिलासा देते मगर मुझे किसी तरह सब्र न आता था।" इतना कह कर वह पुरानी बातों को याद कर फिर रोने लगी।

साहब, मैं नहीं कह सकता कि यह औरत इस रंज के आगाज के पेश्तर कैसी रही होगी मगर जब मैंने उसे देखा उस वक्त भी वह बदन से निहायत मोटी ताज़ी और फर्बह थी। अब तो वह बखुशी बातें करने लगी, उठती तो दो एक मर्तबः बदन का झोंका खाती और फील के मानिन्द आहिस्ते २ कदम उठाती थी। उसका पायजामा निहायत तंग था, चलने फिरने और खास कर बैठने के वक्त यही मालूम पड़ता कि गोया उसकी पिंडलियाँ फट कर बाहर निकल आवेंगी। उसे लँहगा पहिनना चाहता था

मगर नहीं वह जईफ बीबी अब भी अपने हुस्न के गरूर और जिस्म की खूब-सूरती में चूर थी और मैंने बाद्जां सुना कि दरहकीकत जवानी के आलम में उसका जिस्म और कद निहायत बकायदा और सुडौल था।

हम सब बैठ कर अपना अहवाल और अपनी २ मुसीबत बयान करने लगी। शाम होगई मैंने नमाज के लिये शतरंजी बिछाई। जोहरा की मां ने मुझे नमाज पढ़ते देख कर "कहा वाह यह तो खासे सैयद हैं मैं नौजवानी को इबादत का शौक देखकर निहायत खुश होती हूं मगर अकसर हिन्दुस्तान के लोग बहुत कम ऐसे पाये जाते है'।

मैं रवाना होने को था मगर वे सबके सब एकबारगी बोल उठे "क्या आप बगैर हम लोगों के साथ खाये पीए हमारे मकान से चले जाइयेगा"। मुझे इसका मुतलक ख्याल न था सो लाचार मुझे ठहरना पड़ा। खाना तयार था और वे लोग मुझे बुलवाने ही को थे कि मै आगया। मासिवाय इसके वह मोहर्रम का नवां रोज था सो मुझे नाल साहब की सवारी देखने के लिये ठहरना पड़ा। यह पाक नाल उस घोड़े के पैर की थी जिसपर हज़रत पैगम्बर साहब सवार होकर मदीने को तशरीफ ले गये थे। सभों ने मुझ से कहा कि आज सवारी का दिन है जरूर देख लीजिये शायद फिर दोबारा ऐसा मौका आप को न मिले। जोहरा भी बारबार इशारों से मेरे रहने के लिये मिन्नत करती थी पस मेरा भी ऐसाही इरादा हुआ। मैने अपना घोड़ा उस आदमी के साथ वापस भेज कर वालिद से कहला भेजा कि शायद आज मैं वापस न आसकूंगा पस मैंने वह तमाम रात निहायत ऐश वो अशरत में काटो जैसी की मुझे सुवह जोहरा के हकसती पर हरगिज उमैद न थी।

खाना निहायत लज़ीज पका था क्योंकि जोहरा की वालिदा इस फ़न में एकता थी। हरतरह की तरकारियां बनी थीं। छोटी छोटी प्यालियों में खाना इस नफ़ासत और अन्दाज से चुनागया था कि एक के बाद दूसरा प्याला उससे ज्यादातर लज़ीज वो दिलपसन्द था-कितने तरह के पुलाव और मिठाइयां तयार की गई थीं और सबके ऊपर वह फ़राशीस की शराब ऐसी लज्जतदार थी कि मैं उसका बयान आप से क्या करूं; जोहरा की वालिदा ने कहा कि यह

शरबत है और इसे खुद हुजूर सिकंदर जाह साहब नोश फर्माते हैं। उसके पीने से दरहकीकत तबीयत जोश में आ गई। बादज़ां उसने दो एक कश खुद लेकर मुहनाल पोंछ मुझे अपना हुक्का दिया जिसकी खुशबू अम्बर और मुश्क से भी ज्यादा थी। मैं उस वक्त निहायत खुश गोया बिहिश्त में था।

ज़ोहरा ने मुझ से कहा कि "आपने हालते-असीरी और सफ़र की थकावट के बाद अकसर मेरा गाना सुना है मगर उस वक्त मेरी आवाज़ भरपूर न खुलती थी, इस वक्त मेरा दिल निहायत खुश व खुर्रम है अब आप फिर मेरा गाना सुनिये, रसूल अल्ला ऐय्याम मुहर्रम में गाने की मेरी इस गुस्ताखी को माफ फर्मावें—कहिये क्या चीज़ आप को ज्यादातर पसंद है? मेरी हमशीरा मेरा साथ मेरे थकने तक देगी और बादज़ां मैं भी उसके गाने में मदद पहुंचाऊंगी।

ज़ीनत एक सारंगी ले आई और कमाच लेकर सरगम बजाने लगी। ऐसा लहरा मैंने कभी न सुना था, ज़ोहरा ने भी उस वक्त ऐसा समा बांधा कि आज तक उसका गाना ऐसा कभी न जमा था, उसकी हमशीरा जो बजाने में निहायत उस्ताद थी पूरे तौर से उसका साथ देती थी। साहब आप जानिये कि उस वक्त ज़ोहरा के गाने और सारंगी के मीठी आवाज में कुछ भी फर्क न था जिस वक्त दोनों सुर साथही उठते और धीमें होते थे जान पड़ता था कि गोया बिहिश्त की दो हूर गारही हैं कि फिरिश्ते भी उनका गाना सुनने के लिये आस्मान से उतर आये होते।

आखिरकार ताशे, बाजे और डफ का शोर इस कदर ज्यादा हुआ कि उन दोनों ने लाचार होकर गाना बन्द कर दिया।

ज़ोहरा ने कहा "खुदा की मार इन कमबख्तों पर, इस वक्त मेरी तबीयत ऐसे जोश में थी कि मै सारीरात आपको गाना सुनाती, खैर कहिये आपकी तबीयत कुछ खुश हुई या नहीं?

मैंने कहा "तुमने निहायत उमदा गाया, मगर जमरखेर के महल में तुम्हारा जो गाना अौव्वल मर्तबः मैने सुना है वह मेरे जिगर पर ताउम्र के लिये नक्श है, वह हर्गिज़ फ़रामोश न होगा।

ज़ीनत उठ कर खिड़की के पास आई और नीचे देखकर कहने लगी 'या अल्लाह ऐसा जुलूस तो कभी भी देखने में न आया था, आइये फौरन् देखिये वर्नः सवारी निकल जायगी क्योंकि लोग तेज चले जाते हैं"।

पंदरहवां पर्व।

हम लोग फौरन् उठ खड़े हुये। ज़ीनत ने कहा "जल्द आइये वे लोग चारमीनार तक पहुंच गये"।

हम लोग भी खिड़की में से झुक कर देखने लगे और दरहकीकत जुलूस निहायत उमदा था। कोई सैकड़ों आदमी की भीड़ हम लोगों के मज़हबी पंजे के साथ २ चली जाती थी; बहुतेरे उनमें हथियार बांधे थे जो बेशुमार मशालों की रोशनी में चमक रहे थे; कुछ लोग रुपहले और सोनहले ताश के बने हुये झालरदार आफताबगीर हाथ में उठाये थे जो रोशनी के सबब खूब चमकते थे। मगर उस वक़्त चारमीनार की खूबसूरती काबिल देखने के थी, जिस वक़्त सवारी उसके नीचे पहुंची वह सिर से पैर तक रोशन होगया, मैं एकटक उसीको देखरहा था गोया वह यकबयक जमीन से निकल आया हो।

सवारी निकल गई और तमाम एकदम अंधेरा छा गया। बसबब रोशनी के चकचौंध के जो पेश्तर हो चुकी थी चारमीनार मुतलक़ नजर न आता था मगर कुछ देर बाद वह इमारत आहिस्ते २ फिर नजर के रोबरू खुलने लगी और यह मालूम पड़ता था गोया कोई शैतान या सुफेद अज़दहा अंधेरे में खड़ा हो। हम लोग देखही रहे थे कि फिर एक दूसरी सवारी निकली और चारमीनार का अंदरूनी और बेरूनी हिस्सा दुबारा रोशन हो गया मगर सवारी के निकल जाने पर फिर वैसाही सन्नाटा छा गया।

मैं बागोबाग हो रहा था। ज़ीनत हम दोनों को छोड़ कर चली गई और मैं अपनी माशूका के गले में हाथ डाले बैठा था जो मेरे गोद में बैठी थी। हम दोनों आहिस्ते २ प्यार की बातें कर रहे थे जो फ़कत वे ही लोग जान सकते हैं जिनका दिल कभी इस इश्क़ की बला में मुब्तिला हुआ होगा।

साहब, हम दोनों इसी तरह न जाने कितनी देरतक बैठे थे वक्त का गुज़रना मुतलक मालूम न पड़ता था।

यकबयक ज़ोहरा ने कहा "यह देखिये कैसी भीड़ जमा है लोग मशाल बाल रहे हैं अब नाल साहब की सवारी आया ही चाहती है"।

गोकि मुझे लोगों की आवाज़ सुन पड़ती थी लेकिन बसबब अंधेरे के सड़क पर कुछ भी साफ़ दिखलाई न पड़ता था मगर जब पच्छशाखों पर मशालें बाल कर ऊंचे उठाई गईं तो एक बहुत भारी हुजूम दिखलाई दिया। जहां तक निगाह जाती थी सरही सिर नज़र आते थे। सैकड़ों की तो कोई भी गिनती न थी हजारहां आलम की भीड़ इस कदर जमा थी कि सड़क पर हिलना मुश्किल था, हम दोनों निहायत बेकरारी के साथ नाल साहब के सवारी की इन्तज़ारी कररहे थे जो तमाम शहर में गश्त करती थी।

थोड़ेही अर्से के बाद तमाम सवारी साम्हने मुसल्सिल सज कर तयार हो गई और जिस वक्त कतार बांधकर निकली उस की खूबसूरती और रौनक कौन बयान कर सकता है?। हजारों मशाल, हजारों आफताबगीर, तरह २ के हजारों छोटे बड़े झंडे और झंडियां, सैकड़ों हाथी जिन पर निहायत उम्दे और बेशकीमत झूल पड़े थे, एक कतार से चले जाते थे। कितने ही हाथियों पर गंगाजमनी और सोने चांदी के अम्बारीदार हौदे कसे थे जिन पर एक से एक भारी रईस साहूकार, नव्वाबजादे निहायत नफ़ीस लिबास और जवाहिरात के ज़ेवर पहिने सवार थे, उनके पीछे उनके हथियारबंद नौकर भाले हाथ में लिये बैठे थे। सवारी बीच सड़क से जाती थी और दोनों तरफ़ बेशुमार लोग तमाशा देखने के लिये जमा थे।

मैंने देखा कि इन सब में एक हाथी निहायत ऊंचा था जिस पर एक अम्बारीदार हौदे में किसी रईस के चार लड़के बैठे थे क्योंकि उनके आस पास कई एक हथियारबंद नौकर और मुसाहब मौजूद थे। यह जानवर किसी सबब से भड़क उठा, मैं ठीक नहीं कह सकता कि उसके भड़कने की क्या वजह थी, या तो वह लोगों के शोरोगुल, मशाल की चमक और भीड़ को देखकर घबड़ा गया या शायद मस्त हो गया था क्योंकि महावत उसे बमुश्किल रोकता

और बार बार अंकुस को उसके सिर में गड़ाता था जिसके दर्द से वह सूंड़ को ऊपर उठा ज़ोर से चिंघाड़ता। मैंने देखा कि महावत निहायत गुस्से में आगया और लोगों के इशारे से मालूम होता था कि वे उसे धीमा होने की सलाह देते थे मगर हाथी हर्गिज़ न मानता और बेज़ब्त हुआ जाता था। मुझे इस बात का खतरा था कि महावत के बार बार अंकुस गड़ाने से हाथी कोई हादिसा न कर बैठे। भीड़ की कमबख़्ती से इत्तिफ़ाकिया मशाल का कोई जलता हुआ टुकड़ा पल्लशाखे से टूट कर हाथी की पीठ पर गिरा और वह चिंघड़ता हुआ सूंड उठा कर भीड़ में एकबारगी दौड़ा।

या अल्ला,! या अल्ला! साहब यह गज़ब की वारदात थी। हाथी की अवाज़ सुनतेही सैकड़ों जान छोड़ कर भागे मगर भीड़ इस क़दर थी कि भागना ग़ैरमुम्किन था, सब के सब एक दूसरे पर चढ़े जाते और खौफ़ की चिल्लाहट से गोया आसमान फाड़े डालते थे। सब से खतरनाक वारदात यह हुई कि जब वह बदमस्त हाथी भीड़ से रास्ता न पा सका तो उसने सूंड़ से एक शख्स की कमर पकड़ कर उठा लिया और उसे जमीन पर पटक अगले पैर से कुचल मोमयाई कर डाला। आह! उसे याद करके भी तबीयत घबड़ाती है मैंने फौरन् अपनी निगाह फेर ली क्योंकि यह वारदात ऐन मेरे खिड़की के नीचे ही हुई थी।

जब मैंने फिर देखा तो वह जानवर चुपचाप खड़ा उस लाश की तरफ़ देख रह था; उसे लोग फौरन् हटा ले गये और उस बिचारे की लाश उठाकर एक पासही की दूकान में रख दी गई और एक दम सन्नाटा छा गया।

थोड़ीही देर के बाद एक दम "हसन! हुसैन!! दीन! दीन!!" की चिल्लाहट होने लगी और साथही नगाड़ों का शोर इस क़दर हुआ कि कान के पर्दे गोया फटे जाते थे। तो भी इसका अजीब असर दिल पर होता था। सब के सब एक दम उस फाटक की तरफ़ देखने लगे जिधर से नाल साहब की सवारी निकलने को थी और थोड़ेही अर्से के बाद हजारों महताबी के रोशनी के चमक के बीच यह सवारी आई। मैंने चारमीनार की तरफ़ निगाह उठाई जिसकी खूबसूरती और रौनक कौन बयान कर सकता है? जब मशा-

ल की रोशनी में वह इमारत ऐसी चमकती थी तो माहताब की रोशनी में उसका क्या पूछना है। सिरसे पैर तक यह मालूम पड़ता था गोया यह इमारत तमाम चांदी की बनी है, इसके मीनार हवा में बहुत ऊंचे पर चमक रहे थे, जिसके ऊपर तारीकी का बादल इस कदर छाया था कि गोया यह सब किसी शैतान या जिन्न का करस्मा है। माहताबी और आतशबाजी की चमक से मशाल की रोशनी बिलकुल दबी जाती और गंधक के धूयें के अन्दर से एक किस्म की धुंधली सी रोशनी मालूम पड़ती थी। हवा का तो उस वक्त मुतलक नाम व निशान न था।

यकबयक बेशुमार बान चारमीनार की चोटी से उड़ते और आस्मान में सूं सूं करते हुये आ गये और मीनारों से बहुत ऊंचे जा साथही टूटकर हजारों नीले गनसितारे हो गये गोया इनकी बरसात होने लगी। कुछ देर तक ऐसा सन्नाटा छा गया गोया कि कोई सांस भी न लेता था हर एक शख्स सिर उठाकर गनसितारों के खिलने और गिरने का तमाशा देखने लगा। फिर दुबारा गुल हुआ लोगों की भीड़ एकबारगी टूट पड़ी और सब कोई चारमीनार की तरफ़ झुके।

तमाम लोग आहिस्ते २ चले जाते थे मगर पीछे से धक्का इस जोर का था कि सब से आगे वाले लाचार होकर दौड़ने लगे, धीरे धीरे लोगों ने कुछ तेज़ कदम उठाया मगर भीड़ का खातमा न होता था, हर एक मुल्क के वाशिन्दे नज़र आते थे, बहुतेरे उनमें चमकते हुये हथियार कसे हसन, हुसैन कह कर चिल्ला रहे थे। कितनेही फकीरों की कफ़नियां पहिने कुछ मंत्तर वगैरह पढ़ रहे थे, कितने अजब तरह के लिबास पहिने इधर से उधर दौड़ते और मसखरापन करते थे, कितने सिर से पैर तक मुखतलिफ़ रंगों से रँगे थे। चंद शखस ऐसे भी देखने में आये जो कमर, गर्दन या हाथ में घुघुरूं बांधे झनझन् करते घूम रहे थे, कोई शेर की नकल बना था, उसके कमर में रस्सी बांध कर तीन चार शखस खींचते और वह नकली शेर भीड़ में लोगों पर उछलता कूदता और झपटता हुआ चला जाता और सब उसे देखकर हँसते और खुश होते थे।

कितनेही खाल पहिन कर भालू की शकल बने थे, बाज़ बाज़ लम्बी सी दुम लगाकर बन्दर की मानिन्द उछलते कूदते और लोगों को दांत दिखलाते चले जाते थे। कभी कभी कोई रईस हाथी पर से पैसे कौड़ियों की मुट्ठी भर कर चारों तरफ़ फेंकता और गरीब लोग बेतहाशा उसके लूटने के लिये टूटते और आपस में ऐसी मारपीट करते कि बाज वक्त उनमें से कोई २ शख्स जख्मी भी होजाता था। गरोह के गरोह अरबी लोग अपने मुल्क की ज़बान में जंगी गीत गाते हुये निकले और रास्ते में बन्दूकों की आवाज़ करते और बाज़ वक्त खड़े होकर तलवार और जम्बिया निकाल पटे के हाथ दिखलाते थे। ये सब लोग सवारी के पेश्तर थे।

नाल साहब की सवारी ज़रदोज़ी काम के एक सोनहले गद्दी पर निकली जिसके ऊपर की छत्त में चांदी का काम किया था और चारों तरफ़ नुकरई झालर लटक रही थी जो मशाल और महताब की रोशनी में निहायत खूबी से चमकती थी। कई एक मुल्ला लम्बे लम्बे अबा पहिने मुनाकिब और मर्सीहा पढ़ते हुये सवारी के आगे २ चल रहे थे। कितनेही लोग मोर के पंख की चौरी नालसाहब को हांक रहे थे, खुशबूदार चीजें मसलन् लोहबान वगैरह आगे २ जलता था जिसकी खुशबू हवा में चारो तरफ़ फैल रही थी और जो शख्स मेहनत और मशक्कत से किसी तरह सवारी के नज़दीक पहुंच सकता वह मुट्ठी में मलीदा भर कर नाल साहब पर चढ़ाता था।

आहिस्ते २ तमाम सवारी निकल गई। किस बशर की ताकत है जो उसकी खूबी बयान कर सके? दिल पर मजहबी तासीर पैदा करने के लिये ऐसे मेलों को देखना निहायत ज़रूर है। साहब, मैं जो आप से कहता हूं कि दिल पर मज़हबी तासीर पैदा करने के लिये—सो दरहकीकत सही है क्योंकि कौन शख्स ऐसा है कि जो इतने लोगों की भीड़ को एकही मतलब के लिये दिलोजान से जमा देखे और उसके दिल में जोश न हो। घंटों तक हम दोनों बैठे हुये यह तमाशा देख रहे थे, और इस कदर उस्के ख्याल में गर्क थे कि हम लोग आपस में बातें भी न करते थे। आखिरकार तमाम खिल बात निकल गई और सड़क पर सन्नाटा और अँधेरा छा गया; दो एक शख्स

जो कभी २ इधर उधर चलते दिखलाई पड़ते तो जान पड़ता था गोया कब-रिस्तान के शैतान तारीकी में चल रहे हैं।

उस सन्नाटे में कभी कभी किसी फकीर के घंटी की आवाज़ सुन पड़ती थी जो बसबब पीछे रहजाने के दौड़कर सवारी के लोगों में मिलाचाहता था जो दूर निकल गई थी मगर तो भी भीड़ की मिली हुई आवाज़ कान में आती थी। ज्योंहीं हम लोग जाकर सोने को थे देखते क्या हैं कि चन्द लोग एक गड़हे के पास जिसमें कुछ आग सुलग रही थी जमा हैं थोड़ा सा पुआल उस गड़हे में फेंक दिया गया और आग भड़क उठी। चंद लोग तलवारें नि-काल आग के चारो तरफ पटा खेलने और पैंतरा दिखलाने लगे और दूसरे लोग जो आस पास खड़े थे ज़ोर से चिल्ला कर या हुसैन कहते थे। बीच में जो आग बलती थी उससे पटा खेलने वालों की पोशाक और उनके हथियार हवा में खूब चमकते थे, आग धीरे धीरे बुझने लगी यहां तक कि नीचे के लोग बमुश्किल दिखलाई पड़ते थे। फिर दोबारा गड़हे में पुआल डाला गया और आग रौशन हुई और वे लोग फिर जोश में आकर अपना अपना पैंतरा दिखलाने लगे।

रात बहुत गुज़र गई थी और सर्द हवा के चलने से हम लोगों को ख्याल हुआ कि अब कुछ देर आराम करना चाहिये।

ज़ीनत और उसकी मां जाकर पहलेही सो रहीं थीं फ़कत हम दोनों अकेले बैठे रह गये थे।

साहब यह मेरे माशूका के मुलाकात की आखरी शब थी। उस दिन भी तमाम बातें मेरे दिल पर अब तक नक्श हैं और उन पुरानी बातों को याद करके जिन्हें आज मुद्दत होगई कभी राहत और कभी रंज होता है।

खैर दूसरे दिन सुबह को जब मैं ज़ोहरा से रवाना हुआ मुझे वह वक़्त और उस की बातें अब तक याद हैं। मैं हर्गिज़ नहीं भूल सक्ता कि किस मोहब्बत से वह बार बार मुझसे जल्द वापस आने की इल्तजा करती थी, मांसिवाय इस के उस की वह खूबसूरती और मोहब्बत की निगाह जिन से वह जुदाई के वक़्त देखती थी जब कि मैं उसे देर तक सीने से लगा कर

रवाना होने लगा, अब तक याद है। साहब, इस पत्थर से कलेजे पर जो दुनियां के हज़ारहों फ़रेब और गुनाहों से सख़्त हो गया है अब तक उन मोहब्बत की बातों का असर कायम है इन बातों के ख़्याल करने से अब तक मुझे एक किस्म की ताज़गी और राहत होती है क्योंकि मैंने उस के साथ कोई बद-सलूक न किया था। मैंने उसे नव्वाब साहब के दाम से छुड़ाया था वह मुझ से मोहब्बत रखती और मैं भी उसे दिलोजान से चाहता था। फ़कत इस नई मोहब्बत को ज़्यादः मज़बूत करने के लिये चन्द दिनों तक सोहबत की ज़रूरत थी और तब हम दोनों की यह मोहब्बत कब्र तक साथ देती। मगर अब इन बातों के ज़िक्र से क्या फ़ायदा? क्या ज़रूरत है कि मुझ सा कम्बख़्त संगदिल खुख़ार शख़्स जो इन जंजीरों में गिरफ़ार है ऐसे दिलचस्प और इश्क़आमेज़ बातों का ज़िक्र करे? बस साहब इस हाल को मैं यहीं खतम करता हूं अब मैं आप को अपनी ज़िन्दगी का वह अहवाल सुनाता हूं जिसमें आप पेश्तर के बनिस्बत ज़्यादःतर संगदिली का काम पाइयेगा।

मैं लौट कर वालिद के पास आया, मगर वे मेरी गैरहाज़िरी पर कुछ नाराज न हुये; मैंने देखा कि मोहनदासदल्लाल और एक साहूकार सा कोई शख़्स दोनों मेरे वालिद से बैठे बातें कर रहे थे। मोहन दास से मालूम हुआ कि यह साहूकार किसी भारी कोठी का गुमाश्ता था जिसे हमारे माल के खरीदने की ख़्वाहिश थी और सौदा खतम करने के पेश्तर यह शख़्स माल देखने के लिये आया था। उसे तमाम किस्म के कपड़े और जवाहिरात दिखला दिये गये; उसने सब चीज़ें पसन्द कीं और कहा कि मैं इनकी फ़िहरिस्त ले जाता हूं थोड़ी देर के बाद आकर सौदा ते करूंगा।

उसके जाने पर मोहन दास ने कहा "अब आप इनकी कीमत कहिये? आप क्या चाहते हैं"? वालिद ने कहा "मेरे बनिस्बत तुम बेहतर जानते हो, सो तुम्हीं कहो मगर याद रक्खो कि जितने ज़्यादे कीमत पर यह माल बिकेगा उतनाही ज़्यादा फ़ायदा तुमको होगा"।

दल्लाल ने कहा कि "मैं हुज़ूर की इनायत को हर्गिज़ भूला नहीं हूं मैं एक दम यह कह सकता हूं कि कपड़ों की कीमत १६ हज़ार और जवाहिरात की

कीमत १० हजार है, मगर आप ३००००) मांगियेगा तो मैं उम्मेद करता हूं कि आप को २५०००) ज़रूर मिलेगा"।

वालिद ने कहा "यह बहुत कम है इतनी तो मेरी लागत लग गई है अगर मुझे कुछ मुनाफा न मिलेगा तो मैं अपने नौकर चाकर और सिपाहियों का खर्च कहां से दूंगा? मैं ३५०००) तमाम की कीमत कहूंगा"।

दल्लाल ने कहा "बेहतर है, इसमें तो मेरा फ़ायदाही है मगर जितनी कीमत मैंने आंकी है इस्से ज्यादा आप को हर्गिज़ न मिलेगी तो भी अगर आपको मेरा यक़ीन हो और आप इसे मेरे जिम्मे कर दें तो जहां तक हो सकेगा मैं ज्यादा कीमत पर आप के लिये फरोख़ करूंगा"।

वालिद ने कहा "इसमें मुझे कुछ उज्र नहीं है मगर याद रक्खो कि कम से कम २५०००) है इस्से कम मैं एक हब्बा भी न लूंगा"।

उसने कहा "बेशक मैं हुजूर की मर्ज़ी के मुताबिक काम करूंगा"।

वालिद ने कहा 'तो अच्छा जाओ, अल्लाह हाफ़िज़ है मगर जल्द वापस आना"।

दोपहर के पेश्तर मोहनदास फिर खुशी बखुशी आया और कई बार सलाम करके वालिद से कहने लगा "आप बेशक किस्मतवर हैं आप का सौदा बहुत अच्छे कीमत पर बिका, मैंने तीस हजार छ सौ पर तमाम माल बेचा है। इसके लिये बड़ी मेहनत और झौ झौं करना पड़ा और नारायण की कृपा से आप का गुलाम आखिरकार कामयाब हुआ; लीजिये यह साहूकार का रुक्का है।

वालिद ने रुक्का ले लिया और उसे यों देखने लगे गोया पढ़तेही हैं। मुझे उनकी उस संजीदगी को देखकर हँसी आया चाहती थी कि किस ग़ौर से वे उन हिन्दी हर्फ़ों को देख रहे थे जिसका वे एक हर्फ़ भी न जानते थे; कुछ हिन्दी ही पर मुनहसर न था वे किसी ज़ुबान का भी एक हर्फ़ लिखना पढ़ना न जानते थे।

कुछ देर तक रुक्के को देखकर कहने लगे "अच्छा मंज़ूर है मगर इसका रुपया क्योंकर दिया जायगा?।

दलाल ने कहा जिस तरह आप पसन्द करेंगे साहूकार बन्दोबस्त कर देगा; चाहे आप नगद रुपया ले लें या हुण्डी लिखा लेवें मगर चूंकि इस किस्मके तमाम कारोबार छ महीने की मुद्दत पर होते हैं इस लिये आपको नगद रुपया चुकाने में मामूली दर से सूद काट देना होगा।

वालिद ने कहा "और मगर मै हुंडी लूँ तो मैं ख्याल करता हूं कि मेरे बनारस या और किसी शहर में पहुचने तक जहां के नाम की मैं हुंडी लूंगा सूद की मुद्दत काट दी जायगी"।

उसने कहा "बेशक"।

वालिद ने जबाब दिया "बेहतर है, तो तुम साहूकार के साथ यहां आना और जब इसका फैसला हो जायगा वह जब चाहे माल उठा ले जावे"।

मोहनदास ने कहा "बहुत अच्छा" और सलाम करके रवाना हुआ।

तब तक ताजियों के लाने और दरया में बहाये जाने का वक्त होगया और चूंकि यह मुकाम हमारे खेमे से बहुत दूर न था मैने वालिद से अर्ज की कि घोड़े मँगवा कर यह तमाशा भी देखे लेवें।

वे राजी हुए और घोड़ों के आने पर हमलोग सवार होकर रवाना हुये। चलते २ उस पुल पर पहुंचे जिस पर से शहर जाने का रास्ता था। इस पर खड़े होकर नीचे जो निगाह की, देखते क्या हैं कि रंगबरंग के कपड़े पहिने हजारों शख्स बालू में चल रहे हैं। हजारों तो किनारे पर खड़े हैं और हजारों उस के पीछे इस तरह कसे हैं कि अगर कोई चाहे तो भीड़ के सिरही सिर पर कोसों फिर आवे। सेपहर के वक्त सूरज की रोशनी में हजारों आफताबगीर और ताजियों के रंग बरंग के ताश की चीजें चमक रही थीं। हजारों तरह के खुशनुमें रङ्गदार पोशाकों की अजब बहार थी, और गोकि यह तमाम रोनक रात की सवारी के जलूस के मुकाबिल कुछ भी न थी तो भी यह जलवा काबिल-दीद था। हर एक मुहल्ले का ताजिया एक एक करके आता और दर्य्या में डाल दिया जाता जिस में गोकि पानी की निहायत कमीथी तोभी इस काम के लिये काफी था। गरीबों के सेकड़ों छोटे २ लड़के दरया में तैर रहे थे जो ताजिये के गिरते ही उस पर टूटते और पन्नी वगैरह के लालच से उसे नो-

चकर टूकड़े टुकड़े कर डालते। बाज वक्त इस नाचीज़ जिंस के लिये आपस में वे लोग सख्त मार पीट और झगड़ा करते और किनारेवाले लोग यह तमाशा देखकर कहकहा मार कर हँसते थे।

रफ़्तः रफ़्तः तमाम लोग बसबब थकावट के मकान को लौट गये क्योंकि जिस काम में वे कई दिन से शबो रोज़ मशगूल थे वह खतम। होगया कितने ही जगह मैंने देखा कि कोने कतरे में कितने हीं शख्स भांग वगैरह पीकर रात को थकावठ से बेहोश पड़े हैं यहां तक कि पास में खाने पीने के लिये एक कौड़ी भी नहीं, मगर नशे की बेहोशी के आलम में उन्हें भूख व प्यास मुतलक न सताती थी।

इस तरह मुहर्रम खतम हुआ। हम लोगों को पुल पर खड़े खड़े इतनी देर लगी कि शाम को निमाज़ पढ़ने का वक्त हो गया पस हम लोग पास ही के एक मसजिद में चले गये और चन्द मुसलमानों के साथ जो वहां मौजूद थे नामाज पढ़ने लगे।

इसके बाद मैंने वालिद से कहा कि मैं आज फिर ज़ोहरा से मुलाकात करने जाऊंगा, उन्होने कहा अच्छा जाओ मगर सुबह को बहुत जल्द आना क्योंकि कई एक काम करने हैं—मैं इस बात का इकरार कर रवाना हुआ।

मैं आहिस्ते २ अपने घोड़े पर अकेले सूनसान गलियों से चला जाता था। दो चार शख्स जो रास्ते में मिलते सब अपने २ मकान को झपटे चले जाते थे। मैं फौरन् अपने मामूली पहिचाने हुये रास्ते पर आ गया और अपनी माशूका के मकान के साम्हने पहुंचा। मैंने घोड़े से उतर नौकर के मारफ़त इत्तला करादी और इसउम्मेद में था कि जिसे मैं इसकदर दिलोजान से प्यार करता हूं वह फौरन् मुझे खिड़की पर से इस्तकबालकरेगी। मुझे खड़े २ बड़ी देर हुई यहां तक कि मेरा जी घबड़ा गया। मुझे इसका कोई सबब मालूम न होता कि क्यों बेफायदा देर होती है; आखिरकार मेरा नौकर वापस आया और ज्योंही उसने दहलीज़ के बाहर पैर रक्खा किसी शख्स ने धड़ाके के साथ दरवाजा बन्द कर दिया और खिड़की के भी दोनों पल्ले बन्द कर दिये गये। मुझे फौरन् उस बात का ख्याल हुआ जो मैंने ज़ोहरा से चलते

वख़ कहा था और अफ़सोस कि मेरा गुमान सही हुआ। नौकर मेरे पास आकर बयान करने लगा कि—

ज़ोहरा की मां ने मुझसे यों कहा "कि मीर साहब को मेरी सलाम कह कर यों कहदो कि मेरी लड़की किसी दूसरे के यहां नौकर हो गई है और अब वह उस से मुलाकात नहीं कर सकती"। मैं उसे कुछ कहा चाहता था कि वह बुड्ढी मुझ पर बहुत खफ़ा हुई और बोली कि बस मैंने तुम्हारे साथ शरीफ़ाना बर्ताव किया और इस्से ज्यादा तुम हर्गिज़ उम्मेद नहीं कर सकते। जाओ, और उसे मेरी तरफ़ से कह दो कि वह अपने होश की दवाकरे और अक्लमन्द होवे तो ज़ोहरा को भूल जावे क्योंकि अब वह उसे ख़ाबोख्याल में भी नहीं देख सकता; उसकी तलाश की कोशिश बिलकुल बेफायदाहै क्योंकि वह उसके पहुंच से बाहर है। मैं अपनी लड़की का मर जाना ज्यादातर पसन्द करूंगी बनिस्बत इसके कि वह ऐसे आवारः शख्स के साथ मोहब्बत रक्खे जो मौका पाकर उसे घर से निकाल अपना दिल भर जाने पर बीच जंगल में उसे भूखी प्यासी मरने के लिये छोड़ देवे उस्से जाकर यह हाल कह दो और अगर वह अक्लमंद है तो वह बेशक उसे भूल जायगा।"

मैने गुस्से से कहा "बस इतनाही!—क्या उस बुड्ढी रांड़ ने योंही कहला भेजा है? देखो तो सही मैं दर्वाज़ा तोड़ कर अंदर दाखिल होता हूं या नहीं यह कहकर मैंने ज़ोर से दर्वाजे पर धक्का मारा। मगर मेरा ढकेलना और तलवार के मुट्ठे से मारना बिलकुल वेफ़ायदा था दर्वाज़ा अन्दर से निहायत मज़बूती से बन्द था—मैं बार बार ज़ोहरा को पुकारता—और पागलों के मानिन्द गुस्से से चिल्ला कर यह धमकाता कि मैं अपनी जान इसी दर्वाजे पर दे दूंगा और मेरा खून उस कमबख़्त बुड्ढी के गर्दन पर होगा। मगर यह सब फ़जूल हुआ न किसी ने जवाब दिया और न दर्वाजे को जंजीर खुली मैं मायूस होकर बैठ गया। मेरी यह हालत देख कर चन्द लोग जमा होगये और मेरी वजह देख उनमें से एक कहने लगा "अफ़सोस इसकी माशूका बड़ी बेरहम है बिचारे को अन्दर जाने नहीं देती"।

दूसरे ने कहा—"हटे रहिये यह भांग में मस्त है अल्लाह जानता है इसकी

बहुत नज़दीक रहने में ख़तरे का मुकाम है । देखिये इसके हाथ में तलवार है, बस इससे दूर रहनाही बेहतर है, नशेवालों से ज़ादा रस्म जप्त ठीक नहीं ये लोग भी एकतरह से सच्चे ईमान की बेइज्जती करते हैं" ।

मुझे यह सुनकर शर्म दामनगीर हुई और इसके आगे गुस्सा दब गया । मैं अपने घोड़े की तरफ़ चला और उस पर सवार हो आहिस्ता २ रवाना हुआ । मुझे उस वक़्त तमाम जहान तारीक मालूम होता था । एक शब पेश्तर मैं खुशी और ऐश की बुलन्दी पर था और आज मेरी यह हालत है । मैने एक निगाह उस खिड़की की तरफ देखा जहां शब को बैठा मैं अपनी माशूका से मोहब्बत की बातें कर रहा था और जिसके देखने से भी अब मैं मायूस हो गया । मैं बार २ रात की सवारी और ज़ोहरा की बातों को याद करता चला जाता था । खैर किसी तरह बमुश्किल तमाम अपने खेमें में पहुंचा और मारे रंज और अफ़सोस के शतरंजी पर लेट रहा । मुझे तमाम रात नींद न आई और मैं पड़ा पड़ा हजारहां तरकीब ज़ोहरा से मुलाकात की ख्याल करता था मगर कोई भी तरकीब मेरे दिल में न जमती थी । योंहीं एक के बाद दूसरे ख्याल उठते और आप से आप खारिज हो जाते थे । सुबह को जब मै उठा मुझे कुछ बुखार सा मालूम होने लगा और कोई इरादा मुसम्मम न ठहरा । फ़कत एक उम्मेद उस बुड्ढी की बाकी रही जो ज़ोहरा के साथ ज़मरखेर से आई थी । मैने ख्याल किया कि अगर उससे मुलाकात होजाय तो शायद कोई तरकीब अपने माशूका के रिहाई की निकल आवे, पस मैंने सुबह होतेही एक शख्स को उन लोगों में से जो रास्ते में ज़ोहरा के साथ हिफ़ाज़त के लिये थे उस बुड्ढी की तलाश में भेजा ।

सोलहवां पर्व्व ।

इधर कई रोज़ हो गये कि बद्रीनाथ से मुलाकात न हुई, मुझे यह ख्याल हुआ कि कहीं वह मुझे मतलबी न समझ ले इसलिये मैं फ़ौरन् उस सराय की तरफ़ रवाना हुआ जहां वह अपने आदमियों के साथ मुकीम था ।

मुझे देखते ही उसने कहा "आइये २ भला आज आपकी सूरत तो दिखलाई दी। सच कहिये आप को भवानी की कसम है क्या कर रहे थे ? मैं तीन रोज़ से आपको तलाश करता हूं मगर मुलाकात की नौबत नहीं आती"।

मैंने कहा "पहिले आप अपना हाल सुनाइये कि आपने क्या किया बादहू मैं भी अपना अहवाल बयान करूंगा।"।

उसने कहा "अच्छा सुनिये। अव्वल तो मैंने इस मुसल्मानी शहर के कई एक मंदिरों में जाकर पूजा और बलिदान किया बादजां मुहर्रम में शरीक हुआ और आखिर में सात शखूसों का काम तमाम किया" ।

मैंने ताअज्जुब से कहा "क्या! सात शिकार मारे! ज़रा उनका हाल तो सुनाइये"।

उसने कहा "मेरे यार जमादार! यह बड़ी आसान बात थी क्या आप नहीं जानते कि यह कारवांसराय है जहां सेकड़ों नये मुसाफिर रोज़ आते और रोज़ रवाना होते हैं ? पस तो इस मे क्या मुश्किल बात है कि हम भी उसी राह के मुसाफ़िर बनकर उन से हिलमिल जावें! इस जगह तो एक ठग की ज़िन्दगी हमेशा बआराम गुज़र सकती है । यहां के लोग (भगवान की कृपा से) निहायत सीधे सादे और बेशुबहा हैं और हम लोग हनुमान जी और उनके बन्दरों के बड़े ममनून हैं कि शहर के आस पास उजाड़ रास्ते और पहाड़ों की कुछ कमी नहीं है जिनमें इन मुसाफिरों के मारने का बहुत मौक़ा हाथ लगता है"।

मैंने कहा "यह अजब बात है अच्छा कहिये वे लोग कौन थे ?"

बद्रीनाथ ने आम तौर से जवाब दिया "अगर आप इसपर बग़ौर ख्याल करें तो इसमें कुछ भी हैरत की जगह नहीं है--खैर सुनिये --पहिला शख्स ज़ात का बनिया था और बीदर को जाता था उसे हम गोलकण्डा को ले गये जहां उसे मार कब्र बना दफ़न कर दिया। उसके पाससे ७०) रुपये नक़द और कुछ सोना हाथ लगा। दूसरा शिकार--दो शख्स और उनकी औरत का था जो उन्हीं की ज़ुबानी मालूम हुआ कि कुरनूल को जाते थे, भगवान जाने यह शहर कहां है! मगर कहीं दक्खिन की तरफ़ मालूम होता है।

शहर से तीन कोस पर पहाड़ों के बीच हम लोगों ने उनका भी काम तमाम किया और उन्हें वहीं छोड़ दिया।

मैंने कहा "यह आपने बड़ी गलती की आपको चाहता था कि उन्हें दफ़न कर देते"।

उसने कहा "दोस्त मैंने हर्गिज़ गलती नहीं की, किसको गर्ज़ पड़ी है कि उनकी तहक़ीक़ात करता फिरे? सिवाय इसके हम लोगों को उतना वक़्त भी न मिला क्योंकि दिन चढ़ गया था और दूसरे मुसाफ़िरों के आ जाने का ख़तरा था। यहां हम लोगों को अनक़रीब दो सौ रुपयां नक़द और दो टट्टू हाथ लगे जिन्हें मैंने ३०) पर बेच डाला"।

मैंने कहा "तो ये पांच हुये, बाकी दो का हाल कहिये"—

बद्रीनाथ ने एक तरफ़ को इशारा किया जहां एक घोड़ा बँधा था और कहा "वे दोनों उस घोड़े के नीचे हैं ये इतने गरीब थे कि इन्हे यहां से बाहर ले जाने की तकलीफ़ कौन उठाता, इन दोनों के पास फ़क़त ४२/ रुपया निकला"।

मैंने कहा "यह काम आपने निहायत ख़तरे का किया शायद आप को कोई देख लेता"।

उसने कहा "आह! मुझ जैसे पुराने उस्ताद से ख़तरे का नाम न लिजीये सबके सब शहर में तमाशा देखने चले गये फ़क़त इन्हीं लोग अकेले रह गये थे मैं ख्याल कर रहा था कि उनके साथ साथ उस रास्ते से जाना चाहिये जिधर से हम लोग यहां आये थे मगर इतनेही में सर्फ़राजखां ने एक के गले में रुमाल डाल दिया मैंने देखा कि अब ज्यादा सोचना फ़ज़ूल है फ़ौरन् दूसरे के गले में रुमाल डाल उसका भी काम तमाम किया। रात तक दोनों की लाश छिपा रक्खा और तब उन्हें यहीं दफ़न कर ऊपर घोड़ा बांध दिया"।

मैंने पूछा "मगर कब्र के फटने का तो कोई ख़तरा नहीं है?"।

बद्रीनाथ हंसने लगा और बोला "ख़तरा! मुतलक़ नहीं वे बहुत नीचे दफ़न किये गये हैं फिर आप हम लोगों की पुरानी उस्तादी तो जानतेही हैं"।

मैंने कहा "तो यह सब खूब हुआ मगर मैं इसमें भी शरीक न हो सका और अपनी बेवकूफ़ी से अपनी माशूका को भी खो आया"।

बद्रीनाथ खूब हँसा मगर जब उसने मेरे चेहरे की संजीदगी से मेरे कहने को दिल्लगी न समझा तो कहने लगा—

"कुछ परवाह नहीं मीर साहब! मेरे दिल्लगी पर ख्याल मत कीजियेगा, मगर दरहक़ीक़त यार मेरे आपका चेहरा इस वक़्त ऐसाही मालूम पड़ता है, कि मैं हँसी न रोक सका। जाने भी दीजिये, चलिये खुश होइये आप के लिये अभी बहुत काम बाक़ी है। औरतें तो हमेशः बेईमान होती ही हैं और फ़क़त छोकड़े और खफ़्तुलहवास उनके लिये अफ़सोस करते हैं मगर आप अपने दोस्त की सलाह मानिये अपने रोज़गार को अपनी माशूका बनाइये और यह हर्गिज़ आप को धोखा न देगी"।

मैंने कहा "आप की सलाह नेक है ताहम् वह माशूका जो मेरे हाथ से जाती रही, जिसको आप भी खूब जानते हैं, काबिल-अफ़सोस है और शायद मुद्दत तक अब वैसी कोई दूसरी मेरे हाथ न लगेगी। खैर यह कहिये कि क्या काम है?--क्या मैं भी उसमें शरीक हो सकता हूं?"

उसने कहा "नहीं, पर जो आप की मर्ज़ी हो तो आज शाम को हम लोग बाज़ार में टहलने चलें शायद कोई शिकार हाथ लग जावे"।

मैंने कहा "बेशक मैं आप के साथ चलूंगा क्योंकि मुझे खौफ़ है कि अगर मैं अपने काम में गफ़लत करूंगा तो शायद मेरा हाथ झूठा पड़ जावे। मगर यह तो कहिये कि मेरे वालिद और आप से मुलाक़ात हुई थी?"

बद्रीनाथ ने कहा "नहीं, मैंने सुना है कि वे माल के फ़रोख़ में दिलोजान से लगे हैं इसलिये मैंने उनके काम में फ़ज़ूल दख़ल देना वाजिब न समझा"।

मैंने कहा "आप का कहना दुरुस्त है मगर वह काम आज तमाम हो कर रुपया मिल जायगा। मैं ख्याल करता हूं कि इसके बाद हम लोग यहां ज़्यादा न ठहरेंगे, मैं तो हरदम चलने को तयार हूं क्योंकि मुझे नये शहर और नई बातों के देखने का अज़हद शौक़ है, और अब यहां कोई काम भी ऐसा बाक़ी न रहा। क्या सर्फ़राज़खां यहां नहीं है?"

बद्रीनाथ ने कहा "हां वह हमराह सात मुसाफिरों के पहनचेरू को गया है और साथ में अपने दस या पंद्रह आदमी निहायत होशियार लेता गया है; अगर वह वापस भी आवे तो अब के पेश्तर नहीं आ सकता।"।

मैंने पूछा "वे मुसाफिर कौन थे?"

बद्रीनाथ ने बेपरवाही से कहा "कोई बनिये थे, मैंने खुद तो उन्हें देखा नहीं और सर्फराज़खां को भी निहायत जल्दी थी इसलिये वह मुझे बसबब उजलत के कुछ बतला न सका"।

मैंने अपनी सुस्ती के घबड़ा कर कहा "तो तुफ़ है मुझ पर! कि इधर तो ये सब कार्रवाइयां हो रही थीं और मैं फ़ज़ूल वक़्त ख़राब कर रहा था। पस रसूलल्लाह के नाम पर जल्द अपना काम शुरू करना चाहिये क्योंकि मैं मारे शर्मिन्दगी के आप लोगों के साम्हने अपना सिर नहीं उठा सकता"।

"बेहतर है" उसने कहा "आज शाम को आइये अगर हम किसी शख़्स को फुसलाकर धोखा न दे सकेंगे; ताहम् किसी न किसी को फ़क़त दिल बहलाव या आजमाइश के लिये ज़रूर मारेंगे"।

मैंने कहा "मंजूर है, क्योंकि अल्लाह जानता है कुछ न कुछ ज़रूर करना चाहिये मैं निहायत सुस्त और मनहूस हो गया हूं, कल जो खून मेरे दिल में जोश खाता था आज वह मुतलक मालूम नहीं पड़ता—बस अब मैं हर्गिज़ काहिली न करूंगा"।

इतना कह कर मैं रवाना हुआ और मकान पहुंचने पर देखा कि दल्लाल और साहूकार का मुनीम दोनों आ गये हैं। उनके साथ चंद मज़दूर असबाब उठाने और चन्द हथियारबन्द सिपाही बन्दूक और पलीता जलाये और चन्द ढाल तलवार लिये माल की हिफाज़त के वास्ते मौजूद हैं। मैं उन्हें देख कर कहने लगा—

"सेठ जी! इन सिपाही लोगों को देख कर किसी को गुमान होगा कि शायद आप कहीं जंग पर जाते हैं, मैं तो इन्हें देख कर खौफ खा गया"।

वे सब हँस पड़े और मुनीम ने जवाब दिया "नहीं मीर साहब यह निहायत ज़रूरी अम्र है और ये लोग हमेशा हमारे साथ रहते हैं। अगर हमारा

माल चोरी हो जायगा हमारे निगाह के साम्हने हो कोई, उठा ले जाय तो क्या फिर उस का कुछ पता लगेगा? हर्गिज़ नहीं। इसलिये जहां तक हम लोगों से बनता है अपने माल की हिफ़ाज़त करते हैं"।

वालिद ने कहा "तो अब माल उठाइये और ले जाइये चूंकि अब यह माल मेरा नहीं है मैं इसे अपने खेमें में रखने से खौफ़ खाता हूं"।

मुनीम ने कहा "बेशक मैं इन्हें अभी उठवा देता हूं, अब आप रुपयों की बात चीत कीजिये, आप सब नक़द सिक्का लेंगे या कुछ माल भी ख़रीद करेंगे?"

वालिद ने कहा "मैं एक कौड़ी की भी ख़रीद नहीं चाहता मैं नक़द रुपया लूंगा—या ठहरिये सब रुपयों की ज़रूरत नहीं है, आप ५०००) तो चांदी और बाकी का सोना दे दीजिये क्योंकि ले जाने में सुबीता पड़ेगा"।

उसने कहा "तो मैं समझता हूं कि आप पांच हज़ार रुपया और बाकी का सोने की सिल चाहते हैं:—सोना आप तौल से ख़रीद लीजिये, बढ़िया सोना २०) तोला है; मगर बेहतर होगा कि आप हुण्डी ले लें, इस वक़ हुण्डि-यावन भी अच्छा है।

वालिद ने कहा "नहीं नहीं मैं हुण्डी हर्गिज़ नहीं चाहता, मुझे सोना दे दीजिये, मुझे याद है कि जब मैं दिल्ली से रवाना हुआ था उस वक़ सोने का दर तेज़ था और बहुत दिन तक तेज़ रहने की उम्मेद थी; मेरे साथ हि-फ़ाज़त के लिये पहिरेदार बहुत हैं योंही और मुझे रास्ते में डाकुओं का डर मुतलक नहीं है"।

दल्लाल ने कहा "मुझे तो आप भूलेही जाते हैं मेरी दल्लाली चाहिये न?"

मैंने कहा "सब्र करो, वह तुम्हें ५०००) रुपयों में से दिया जायगा, मैं समझता हूं तुम्हें फ़कत डेढ़ हज़ार देना होगा"।

मुनीम ने पूछा "क्या कहा? डेढ़ हज़ार? किसे देना होगा?"

मैंने कहा "इस दल्लाल पर-मुझे शक होता है कि शायद यह मुझे ठगता है"।

उसने कहा "बेशक ठगता है, क्यों मोहनदास! अरे भले आदमी क्या ऐसी भी दल्लाली होती है, कुछ पागल तो नहीं हो गया जो इतना मांगता है?"

उसने कहा "यह तो हुज़ूर ने मुझे खुद इनायत करने का इकरार किया

है और मैं बिलायक इतना पाऊंगा, मेहरबानी करके आप इसमें दख़ल न दीजिये"।

वाजिद ने पूछा "तो इसे कितना देना चाहिये ?"

उसने कहा "रुपया सैकड़ा काफ़ी है, आप को तो यह भी बच जाता अगर आप ने खुद साहूकारों से मुलाकात कर के सौदा तै किया होता"।

मैंने कहा "आप का कहना सही है मगर हम लोग बसबब मुसाफ़िर होने के नहीं जान्ते थे साहुकारों की कोठियां कहां है इस लिये हम लोगों ने लाचार होकर इस बदमाश से जो अज़खुद आगया इस बारे में गुफ़्गू की"।

दलाल ने ज़रा ज़ोर से कहा "यह क्या ? क्या आप मुझे चारमीनार से नहीं बुला ले गये ? और क्या आपने पांच रुपया सैकड़ा देने का इकरार कर मुझे माल के बिक्री का हाल पोशीदा रखने को नहीं कहा था ?"

वाजिद ने कहा "यह देखो, इस्की सुनो, इसे कुछ खफ़ान् सवार हुआ है। क्या ? क्यों मीरसाहब आपही कहिये कि यह बदमाश हाथ जोड़ता और मिन्नत करता आपही के सामने न आया था और कहता था कि मुझसे कुछ खिदमत लिजिये, मैंने कहा अच्छा अपनी शर्तें बयान करो तो इसने कहा मैं निहायत गरीब हूं जो कुछ हुजूर देंगे मुझे मंजूर है; क्यों यही बात थी न ? और अब खुदा की पनाह यह ऐसी बातें करता है और (१५००) मांगता है जब कि हमारे पास देने को इतनी कौड़ियां भी नहीं है, फिर इस सौदे में हम ने क्या खाक कमाया ? लगाओ इस के सिर पर जूते और थुक दो उस के मुंह पर इस बदमाश को तो दरियाये-गंग का पानी भी पाक नहीं कर सक्ता; इस की मां —

साहूकार के मुनीब ने कहा नहीं जनाब इस कदर गरम न हूजिये और आप का ऐसे कमीने नालायक पर नाराज़ होना भी फज़ूल है मगर चूंकि आपने इससे काम लिया है तो कुछ न कुछ देना चाहिये, यह दस्तूर है दूसरी मर्तबः आप को इसकी आगाही रहेगी अगर कहिये तो मैं रुपये सैकड़े के हिसाब से ३०६) इसे दे दूं।

वाजिद ने हैरतसे कहा 'कितना ! ३०६) — या अल्लाह या अल्लाह ? मुझे तो

इसका आधा भी मिलना मुश्किल है, रसूल अल्लाह के नाम पर कुछ और कमती कीजिये मुझे आप के सरीदश्म की कसम है मैं निहायत गरीब शख्स और फकत गुमाश्ता हूं क्यों मीरसाहब आप देखतेही हैं कि मैं किस कदर तंगदस्त हूं,,।

मैंने कहा "बेशक ऐसे भारी रकम पर रुपया सैकड़ा आप हर्गिज नहीं दे सक्ते मगर चूंकि ऐसा दस्तूर जान पड़ता है बेहतर होगा कि आप १५०) इसे दे दें।

वालिद ने कहा 'बेशक इस्के लिये मैं तैयार हूं जो कुछ वाजिब है मैं उस्से हर्गिज् इनकार नहीं करता मगर इस कदर रुपया सुन कर मेरा तो होश उड़ गया और मैं बेवकूफ सा बन गया था"।

इस वक्त मोहनदास चुप चाप खड़ा मुँह खोले हैरत से हर एक की तरफ देख रहा था और ज्यों ज्यों हम लोगों कि बाते सुनता त्यों त्यों उस पर ज्यादःतर ताज्जुब और मायूसी कि अलामत झलकती थी आखिरकार वह घबड़ा कर कहने लगा।

"तो क्या—क्या आप चाहते हैं कि मैं अपना १५००) जिसके लिये मैंने रात दिन मेहनत किया है न पाऊंगा? और क्या मैं ही पहिले आप के पास आया था आप मुझे चारमीनार से अपने साथ नहीं ले गये?

मैंने गुनीव से कहा "हर्गिज् नहीं फिर वही चारमीनार का लफ़ज्—अल्लाह के वास्ते अगर आप इस बदमाश को जानते हों तो इसे चुप रहने की सलाह दीजिये। भला मुझ सिपाही और इस बदमाश के हराम रोज़गार से क्या सरोकार? इसकी बातें सुनकर मुझ साबिर को भी गुस्सा आता है और अभी यह नहीं जानता कि हथियारबंदों से दिल्लगी करना नेक मसलहत नहीं है' यह कह कर मैंने मोछों पर ताव दिया।

साहब मैं आप से पेश्तर अर्ज़ कर चुका हूं कि वह दल्लाल किस कदर बुज़दिल था, इतना सुनतेही वह फ़ौरन् ज़मीन पर नाक रगड़ हाथ जोड़ कर कहने लगा।

"माफ़ कीजिये माफ़ कीजिये मुझ से कुसूर हुआ आप जो कुछ इनायत

करेंगे चाहे दसही रुपया दें मुझे बखुशी मंजूर है लेकिन मुझे न मारिये, मेरी जान बख्श दीजिये, देखिये मैं आप के कदमों पर गिर कर खाक में नाक रगड़ता हूं"।

वह मुनीब बदन का निहायत मोटा था। उसकी यह हालत देख हँसने लगा और बोला "अरे मोहन दास तू कैसा उल्लू है जो ऐसी बातें हमारे ही साम्हने कर रहा है; अरे नारायण के नाम पर भलेआदमी तुझे कौन मारता है? क्या तू लड़का है? इतना बड़ा हुआ मोंछे आईं और तू ऐसी बातें करता है। तुफ़ है तुझ पर भलेआदमी तू दल्लाल होकर ऐसा नामर्द हुआ जाता है उठ खड़ा हो और आदमियों के मानिन्द अपना रुपया मांग और जो कुछ ये अशराफ लोग तुझे दें बखुशी ले क्योंकि जब तूने धोखा देने की नीयत की थी तब तुझे एक कौड़ी भी न मिलना चाहिये"।

वह उठ कर बायें पैर पर खड़ा होगया और दहिना पैर दूसरे पैर की पेंडुली पर रख हाथ जोड़ चुप चाप देखने लगा। उसकी पगड़ी के पेंच खुले जाते थे और उस वक़ उसका चेहरा देख कर अज़खुद हँसी आती थी।

उसने हिचकिचा कर कहा "दस रुपया मालिक, गुलाम दसही रुपये पर राज़ी हो जायगा"।

हम सब कहकहा मार हँसने लगे; गुमाश्ते के शिकम में हंसते २ बल पड़ गया और वह दम ले कर कहने लगा—

"या भगवान! या नारायण! यह कैसी बात है। या सीताराम! यह अजब दिल्लगी है! दस रुपये! अरे भले आदमी अभी तो तू पंदरह सौ मांगता था!"।

वालिद ने कहा "नहीं नहीं इसका जो वाजिब हो दो। आपने १५०) न कहा था?—खैर दे दो। और आप मीरसाहब इन साहूकार के साथ कोठी जाकर रुपया ले आइये। मैं कह सकता हूं कि ये आप के साथ पहरा भी कर देंगे और आप कोई मज़दूर सोने चांदी के उठाने के लिये वहां कर लीजियेगा"।

गुमाश्ते ने कहा "बेशक मैं आपके साथ हिफ़ाजत के लिये पहरा कर